वर्ष –01, अंक – 04 (अक्टूबर–दिसम्बर, 2023)

राजभवन संवाद

राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

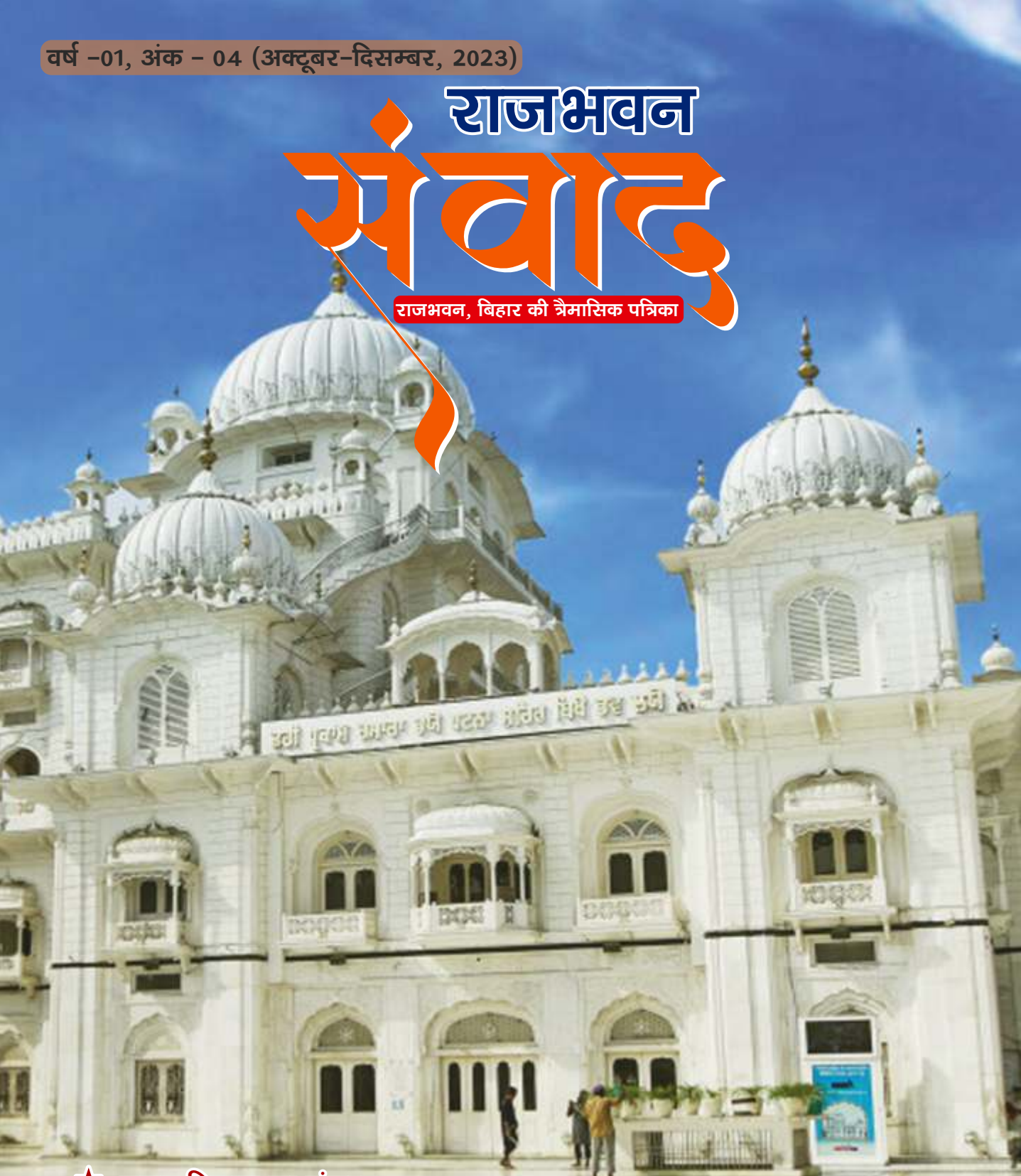

- ★ समग्र विकास का संकल्प
- ★ महर्षि विश्वामित्र : राजर्षि से बने ब्रह्मर्षि
- ★ कुम्हरार : चंद्रगुप्त मौर्य के महल का अवशेष
- ★ गया का तिलकुट : खुशबू और स्वाद में लाजवाब
- ★ भाई–बहन के प्रेम का त्योहार सामा–चकेवा

काव्य स्वर

आरसी प्रसाद सिंह

जीवन और यौवन के कवि

जन्म– 19 अगस्त,1911

मृत्यु– 15 नवंबर,1996

आरसी प्रसाद सिंह भारत के प्रसिद्ध कवि, कथाकार और एकांकीकार थे। आपकी गिनती देश व बिहार के श्रेष्ठ कवियों में होती है। आप हिंदी और मैथिली भाषा के महान कवि थे। आपका जन्म बिहार के समस्तीपुर जिला के ग्राम एरौत में 19 अगस्त, 1911 को हुआ था। एरौत बागमती नदी के किनारे बसा है। यह आपकी जन्मभूमि व कर्मभूमि है, इसीलिए इस गांव को आरसी नगर एरौत के नाम से भी जाना जाता है। आपकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई। शिक्षा पूर्ण करने के बाद आपका मन साहित्य लेखन की ओर केंद्रित होने लगा। आपकी रचनाओं को पढ़ना हमेशा ही दिलचस्प रहता है। आपने हिंदी साहित्य में बाल काव्य, कथा काव्य, महाकाव्य, गीत काव्य, रेडियो रूपक एवं कहानियों समेत कई रचनाएं हिंदी एवं मैथिली साहित्य को समर्पित की हैं। आपको जीवन और यौवन का कवि कहा जाता है। बिहार के चार नक्षत्र में वियोगी, प्रभात और दिनकर के साथ आरसी प्रसाद सिंह सदैव याद किए जाएंगे। आपको सन् 1984 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

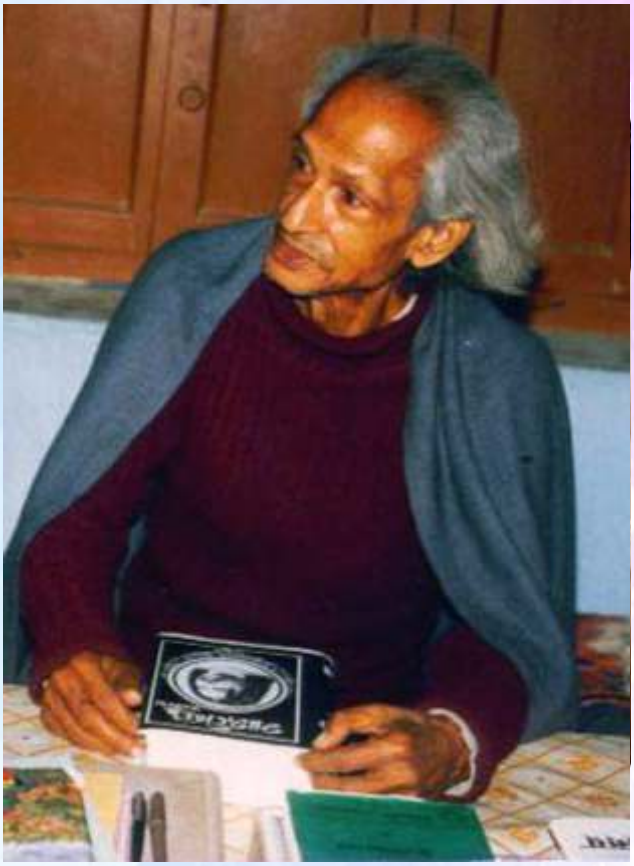

जीवन का झरना

यह जीवन क्या है? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है।
सुख–दुख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है।

कब फूटा गिरि के अंतर से? किस अंचल से उतरा नीचे?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है।
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है, बढ़े चलो, देखो मत पीछे मुड़ कर।
यौवन कहता है, बढ़े चलो, सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है, जीवन चलता ही रहता है।
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है।

वर्ष -01, अंक - 04 (अक्टूबर-दिसम्बर, 2023)

राजभवन संवाद
राजभवन, बिहार की त्रैमासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
रॉबर्ट एल.चोंग्थू

कार्यकारी संपादक
राकेश पाण्डेय

संपादक मंडल
प्रीतेश देसाई
संजय कुमार
धीरज नारायण सुधाँशु

सम्पादकीय पता : जन-सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना, बिहार - 800022
ई मेल : pr.rajbhavan@gmail.com
दूरभाष : 0612-2786119
E-Patrika - www.governor.bih.nic.in

प्रकाशक/मुद्रक : स्वत्व मीडिया नेटवर्क प्रा.लि., नियर कुल्हड़िया कॉम्प्लेक्स, पटना, बिहार से प्रकाशित एवं मारुति ऑफसेट, डी.एन. दास रोड, बंगाली अखाड़ा, पटना से मुद्रित।
ई मेल : swatvapatrika@gmail.com
दूरभाष : 9608190823

भारत के सम्यक विकास का व्यापक दृष्टिकोण

विकास की एक व्यापक अवधारणा है जो सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति या उन्नति की प्रक्रिया को संदर्भित करती है। विकास का तात्पर्य व्यक्तियों और समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार, उनकी क्षमताओं और अवसरों को बढ़ाने तथा गरीबी और असमानता को कम करने की प्रक्रिया से है। निर्विवाद रूप से विकास एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक समानता, पर्यावरणीय स्थिरता और सुशासन सहित विभिन्न कारक शामिल होते हैं। यह विभिन्न स्तरों जैसे कि व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो सकता है और विभिन्न संचालकों जैसे सरकारों, निजी क्षेत्र, नागरिक समाज और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा संचालित किया जा सकता है।

सम्यक और समग्र विकास के लिए विभिन्न हितधारकों की भागीदारी और सहयोग के साथ ही एक दीर्घकालिक और टिकाऊ दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होती है जो समाज के सभी सदस्यों, विशेष रूप से सबसे कमजोर और हाशिए पर रहने वाले लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं पर केन्द्रित होता है। 'विकसित भारत @ 2047' की संकल्पना भारत के समग्र विकास के व्यापक दृष्टिकोण पर ही आधारित है। दरअसल सतत विकास का अर्थ विकास की वह रणनीति है जो सभी प्राकृतिक, मानवीय, वित्तीय व भौतिक संसाधनों की समृद्धि के साथ ही यह सुनिश्चित करती है कि भावी पीढ़ी के हितों का भी उसमें संरक्षण व संवर्द्धन हो। विकास के विभिन्न आयामों में जनाकांक्षाओं को सहभागी बनाने से लक्ष्य हासिल करना आसान हो जाता है।

'राजभवन संवाद' त्रैमासिक पत्रिका के इस चतुर्थ अंक (अक्तूबर–दिसम्बर, 2023) में अन्य नियमित कॉलम के साथ ही माननीय राज्यपाल के 'शब्द–संवाद' तथा विभिन्न अवसरों व कार्यक्रमों में प्रस्तुत उनके संबोधनों एवं अन्य गतिविधियों को समाहित किया गया है। प्रस्तुत अंक में इस बार 'काव्य–स्वर' के तहत 'जीवन और यौवन' के कवि आरसी प्रसाद सिंह का संक्षिप्त जीवन–परिचय और उनकी एक कालजयी रचना 'जीवन का झरना' के साथ 'बिहार–विभूति' के अन्तर्गत महर्षि विश्वामित्र : राजर्षि से बने ब्रह्मर्षि', 'धरोहर' में 'कुम्हरार : चन्द्रगुप्त मौर्य के महल का अवशेष', 'बिहारी स्वाद' में 'गया का तिलकुट : खुशबू और स्वाद में लाजवाब' तथा 'लोक–संस्कृति' के तहत 'सामा–चकेवा : भाई–बहन के प्रेम का त्योहार' को संयोजित किया गया है।

आशा है, पूर्व की तरह यह अंक भी आपको पसंद आयेगा।

शुभकामनाओं के साथ–

(रॉबर्ट एल० चोंग्थू)
राज्यपाल के प्रधान सचिव

इस अंक में...

विकसित भारत @2027 : समग्र विकास का संकल्प	04
राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण - राज्यपाल	06
राष्ट्रीय शिक्षा नीति से रोजगार के लिए सक्षम होंगे युवा	07
सहिष्णुता हमारी संस्कृति का आधार - राज्यपाल	08
बिहार में कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए - राज्यपाल	09
छात्र-छात्राएं समाज और देश के हित में कार्य करें - राज्यपाल	10
किसानों को मिलना चाहिए कृषि योजनाओं का लाभ	14
एक भारत-श्रेष्ठ भारत	16
प्रवास/परिभ्रमण	18
भारत की विविधता में ही हमारी एकता - राज्यपाल	20
महर्षि विश्वामित्र : राजर्षि से बने ब्रह्मर्षि	21
शिष्टाचार मुलाकात	23
बिहार डेयरी और कैटल एक्सपो में दिखा पशुओं के प्रति प्रेम	25
कुम्हरार : चंद्रगुप्त मौर्च के महल का अवशेष	26
गया का तिलकुट : खुशबू और स्वाद में लाजवाब	28
भाई-बहन के प्रेम का त्योहार सामा-चकेवा	29

आवरण : तख्त हरिमंदिर गुरुद्वारा, पटना साहिब
फोटो : सौजन्य इंटरनेट

विकसित भारत @2047
समग्र विकास का संकल्प

राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर
राज्यपाल, बिहार

आज भारत विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ रहा है और यदि यह गति निर्बाध रूप से जारी रही तब हमारा देश वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बन जायेगा। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए केन्द्र सरकार ने एक दृष्टिकोण पत्र 'विकसित भारत @ 2047' तैयार किया है जिसमें सामाजिक व आर्थिक विकास, पर्यावरणीय स्थिरता, सुशासन एवं विकास के विविध पहलुओं को शामिल किया गया है। वर्तमान में भारत विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है और वर्ष 2047 तक हमारी अर्थव्यवस्था 30 ट्रिलियन डॉलर की होने का अनुमान है।

आज हमें यह तय करना है कि वर्ष 2047 में, जब हम अपनी आजादी का 100वाँ उत्सव मना रहे होंगे तब हमारा देश कैसा होगा और विश्व में हमारा स्थान कहाँ होगा। पिछले कई दशकों में विश्व के अनेक देशों यथा– जापान, जर्मनी, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया आदि ने उल्लेखनीय प्रगति की है और भारत भी वैश्विक पटल पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने को अग्रसर है।

विगत 9–10 वर्षों में भारत ने अपनी क्षमताओं का अभूतपूर्व प्रदर्शन किया है, चाहे वह खेल का क्षेत्र हो या वित्तीय समावेशन अथवा कोविड टीकाकरण के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य के प्रति प्रतिबद्धता। भारत ने यदि चन्द्रयान को चाँद पर सफलतापूर्वक लैंडिंग कराकर अंतरिक्ष की दुनिया में एक मजबूत दस्तक दी है तो पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्य के प्रति भी हमने अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। भारत ने एक ओर डिजिटीकरण में अग्रणी स्थान प्राप्त किया है तो दूसरी ओर इसने अपने बुनियादी ढ़ाँचे का भी तेजी से विस्तार किया है। G-20 की अध्यक्षता कर हमने अपनी कूटनीति और संगठनात्मक क्षमता का लोहा मनवाया है। आज कई मायनों में भारत दुनिया का नेतृत्व कर रहा है और विश्व हमारी ओर देख रहा है।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने आगामी 25 वर्षों को अमृत काल कहा है और उन्होंने समस्त देशवासियों से इस कालखण्ड में वैसे सभी प्रयत्न करने का आवाहन किया है जिससे वर्ष 2047 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बन सके। भारत की विशाल आबादी को उन्होंने देश की परिसम्पत्ति (Asset) मानते हुए युवा वर्ग को इस मिशन का वाहक माना है। आज के युवाओं द्वारा ही भविष्य में नये परिवार और समाज का सृजन होगा, इसलिए उन्हें ही यह निर्णय लेने का अधिकार है कि वर्ष 2047 का भारत कैसा होना चाहिए।

आज विश्व में सर्वाधिक युवा शक्ति हमारे देश में है, जिन्हें ज्ञान–विज्ञान, आधुनिक तकनीक एवं कौशल विकास से पूर्ण क्षमतावान बनाकर हम आगे की यात्रा शुरू कर सकते हैं। परंतु यह भी आवश्यक है कि हमारे युवाओं में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को धारण करने एवं उच्चादर्शों पर चलने की यथेष्ट क्षमता हो तथा उनका पूर्ण रूप से भावनात्मक विकास हो। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 उपयोगी है। यह नीति हमारी जरूरतों के अनुरूप और 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने वाली है। इसका अनुसरण कर भारत एक वैश्विक ज्ञान महाशक्ति (Global Knowledge Superpower) बन सकेगा।

वर्ष 2047 तक भारत को विकसित बनाने में शिक्षाविदों एवं शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। आज उनके सामने समाज एवं देश के पुनर्निर्माण का लक्ष्य है। उनका दायित्व है कि वे बच्चों को बेहतर शिक्षा एवं संस्कार देकर व्यक्ति–निर्माण में अपना योगदान दें। इसके लिए उन्हें स्वयं को भी तैयार करना होगा। उन्हें नवीनतम जानकारी रखनी होगी, नई तकनीकों को नियमित रूप से सीखना होगा तथा प्रासंगिक बने रहने के लिए सभी

आवश्यक प्रयत्न करने होंगे।

विकसित भारत के निर्माण में शिक्षकों एवं युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए माननीय प्रधानमंत्री जी ने 'विकसित भारत @ 2047 : युवाओं की आवाज' कार्यक्रम में विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों एवं संकाय सदस्यों से संवाद करते हुए युवाओं से सुझाव मांगे।

भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए आवश्यक है कि हमारा देश कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, रक्षा आदि सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बने। हमारे गाँव भी आत्मनिर्भर बनने चाहिए। इसके लिए वोकल फॉर लोकल', 'लोकल फॉर ग्लोबल', 'मेक फॉर वर्ल्ड', और 'ब्रेन ड्रेन टू ब्रेन गेन' जैसे नारों को वास्तविक धरातल पर उतारने की जरूरत है। आत्मनिर्भरता के लिए हमें स्वदेशी चीजों का ही उपयोग करना चाहिए।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कठिन संघर्षों को हम याद करें। अपने अनवरत प्रयासों, मजबूत इच्छा शक्ति, अप्रतिम धैर्य और अदम्य साहस से हमने भारतमाता को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाई। इसके लिए हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को कठिन यातनाएँ सहनी पड़ी और अनेक लोगों को अपने प्राणों की आहूति भी देनी पड़ी। देश की आजादी के लिए किया गया वह संघर्ष हमें प्रेरणा देता है और भरोसा दिलाता है कि अपनी संकल्प शक्ति से कठिन–से–कठिन लक्ष्य को भी हम प्राप्त कर सकते हैं। यह हमें आश्वस्त करता है कि भारत के विकास यात्रा की एक नई कहानी लिखने की सारी क्षमताएँ हममें मौजूद हैं। भारत का गौरवशाली अतीत भी हममें एक प्रकार का आत्मविश्वास पैदा करता है कि यदि यह देश कभी दुनिया का सिरमौर था तो दुबारा भी विश्व में अग्रणी बन सकता है। पूर्व में भारतवासियों के प्रयत्न से ही यह विश्वगुरु था और आगे भी हमारे प्रयासों से ही यह विश्ववंद्य और सभी क्षेत्रों में दुनिया में महाशक्ति बनेगा।

विकसित भारत का निर्माण यहाँ के नागरिकों, विशेषकर युवाओं के प्रयत्नों से ही होना है। इसलिए उन्हें ही यह तय करना चाहिए कि वर्ष 2047 का भारत कैसा होगा और इसके लिए हमें कब, कैसे और क्या करना है। एक प्रकार से विकसित भारत का रोडमैप उन्हें ही तैयार करना है। देश के प्रत्येक व्यक्ति को सकारात्मक सोच के साथ अपने कार्य विशेष के लिए अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी और भूमिका स्वंय तय करनी होगी जो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में उपयोगी साबित हो सके। उन्हें यह ध्यान रखना होगा कि उनकी प्रत्येक गतिविधि देश के विकास के लिए समर्पित हो। यहाँ तक कि अपने बच्चों की परवरिश के दौरान भी उन्हें यह स्मरण होना चाहिए कि वे भारत का योग्य नागरिक तैयार कर रहे हैं जो देश के विकास में योगदान देंगे।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की राह में अनेक चुनौतियाँ भी हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि हम अपनी मजबूत संकल्प शक्ति से सभी बाधाओं को दूर कर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे। भारत विविधताओं से भरा हुआ देश है फिर भी हम एक हैं। समय–समय पर कुछ विरोधी शक्तियाँ हमारी एकता को भंग करने का प्रयास करती हैं, परंतु हमें इनसे सावधान रहकर एकत्व के सूत्र को दृढ़ता प्रदान करने की जरूरत है, क्योंकि 'एक भारत' ही 'श्रेष्ठ भारत' हो सकता है। आपसी एकता और समझदारी के सहारे ही हम अपने प्रयत्नों को देश के विकास की दिशा में उन्मुख कर भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने में सफल हो सकते हैं।

विकसित भारत से मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि हमारा देश सिर्फ आर्थिक मानदंडों पर विश्व में अग्रणी हो। मेरा स्पष्ट मत है कि प्रत्येक भारतवासी न सिर्फ आर्थिक रूप से समृद्ध हो, बल्कि उसके जीवन में खुशियाँ भी हों। उसका जीवन सहज, सुंदर एवं सरल हो तथा उसके चेहरे पर मुस्कान हो।

आज भारत अपने इतिहास के एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। वर्तमान समय भारत के लिए अमृत काल है और इस कालखंड में देश एक लंबी छलांग लगाने के लिए तैयार है। हमारा दायित्व है कि हम परिवर्तन के इस महान घटना का मूकदर्शक न बनकर इसमें सहभागी बनें। आइए! हम इस अमृतकाल के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग कर भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अपना सर्वोत्तम योगदान देने का संकल्प लें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण –राज्यपाल

"राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश को एक नई दिशा देनेवाली है तथा इसके कार्यान्वयन में शिक्षकों की सहभागिता अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके मन में यह भाव होना चाहिए कि राष्ट्र निर्माण हेतु ईश्वर प्रदत्त इस विशिष्ट दायित्व का निर्वहन उनकी जिम्मेदारी है।"—यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने आई०आई०टी०, पटना में 10 अक्तूबर, 2023 को 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर आयोजित कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि लॉर्ड मैकाले की शिक्षा नीति ब्रिटिश शासन के हितों के अनुरूप थी और इससे भारत का काफी नुकसान हुआ। परन्तु, अब देश करवट ले रहा है और हमें इस परिवर्तन में सहभागी बनना है। आज पूरा विश्व भारत की ओर देख रहा है। ऐसे में हमारा दायित्व है कि हम समय की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए राष्ट्र निर्माण में सहभागी बनें।

माननीय राज्यपाल दीप प्रज्वलन कर कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए (10 अक्टूबर, 2023)

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (10 अक्टूबर, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 देश को एक नई दिशा देनेवाली है। हमें इस महत्वपूर्ण दस्तावेज में निहित भावना को समझना होगा। उन्होंने इस नीति के क्रियान्वयन में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि ईश्वर ने उन्हें राष्ट्र निर्माण के एक विशिष्ट कार्य के लिए चुना है। उन्हें इस दायित्व का निर्वहन पूर्ण मनोयोग के साथ जिम्मेदारीपूर्वक करना चाहिए।

कार्यक्रम को भारतीय शिक्षण मंडल के आयोजन सचिव श्री बी०आर० शंकरानन्द, आई०आई०एम०, बोधगया की निदेशक प्रो० विनीता सहाय एवं आई०जी०आई० एम०एस०, पटना के निदेशक डॉ० (प्रो०) बिन्दे कुमार ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर आई०आई०टी०, पटना के निदेशक प्रो० टी०एन० सिंह एवं अन्य प्राध्यापकगण, विभिन्न विश्वविद्यालयों के वर्तमान एवं पूर्व कुलपतिगण, विभिन्न शिक्षण संस्थानों के प्रतिनिधिगण व शिक्षाविद् तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के छठे सीनेट की बैठक में राज्यपाल ने कहा –

राष्ट्रीय शिक्षा नीति से रोजगार के लिए सक्षम होंगे युवा

माननीय राज्यपाल – सह – कुलाधिपति श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 12 अक्तूबर, 2023 को पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के सीनेट की छठी बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के क्रियान्वयन से देश आगे बढ़ेगा। इस नीति को काफी विचार–विमर्श के बाद तैयार किया गया है तथा यह हमारे देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप है। यह नीति युवाओं को अपने समाज से जोड़े रखकर उन्हें स्वरोजगार के लिए सक्षम बनाती है।

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के छठे सीनेट की बैठक की अध्यक्षता करते माननीय राज्यपाल (12 अक्टूबर, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि अब समय बदल रहा है। बिहार के बच्चों का भविष्य हमारे हाथों में है और परिवर्तन के इस दौर में हमें पीछे नहीं रहना है। उन्होंने कहा कि पहले पूरी दुनिया के लोग हमारे यहाँ अध्ययन के लिए आते थे, परन्तु आज हमारे बच्चे पढ़ाई के लिए बाहर जा रहे हैं, यह विचारणीय है। नई शिक्षा नीति आने पर ऐसा नही होगा। हमें अपनी शैक्षणिक व्यवस्था को अत्यन्त उच्च स्तर का बनाना है ताकि बाहर के लोग यहाँ अध्ययन के लिए आ सकें। स्व वित्तपोषित शिक्षा के संबंध में सीनेट के कुछ सदस्यों के जिज्ञासा के समाधान के क्रम में राज्यपाल ने कहा कि कोचिंग संस्थान हमारी शिक्षा व्यवस्था के अंग नहीं हो सकते।

राज्यपाल–सह–कुलाधिपति की अध्यक्षता में जे०डी० वीमेन्स कॉलेज, पटना के सभागार में आयोजित इस बैठक में लखनऊ विश्वविद्यालय में भौतिकी विभाग के अध्यक्ष प्रो० एन०के० पाण्डेय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के संबंध में विस्तारपूर्वक बताया तथा सदस्यों के प्रश्नों का यथोचित उत्तर भी दिया। बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० आर०के० सिंह, प्रतिकुलपति प्रो० गणेश महतो, कुलसचिव प्रो० शालिनी, सीनेट के सदस्यगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने सैनिक कल्याण निदेशालय की राजकीय प्रबंध समिति की बैठक में भाग लिया

सैनिक कल्याण निदेशालय की शासकीय प्रबंध समिति की बैठक में माननीय राज्यपाल (17 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर की अध्यक्षता में 17 अक्तूबर, 2023 को सैनिक कल्याण निदेशालय के राजकीय प्रबंध समिति की 21वीं बैठक राजभवन के सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में भूतपूर्व सैनिकों, शहीद सैनिकों की विधवाओं एवं आश्रितों के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं पर व्यापक चर्चा हुई और महत्वपूर्ण निर्णय लिये गए। बैठक में सदस्यों को राज्य प्रबंधन समिति की 21वीं बैठक के अनुपालन प्रतिवेदन से भी अवगत कराया गया।

बैठक को संबोधित करते हुए राज्यपाल ने कहा कि भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके आश्रितों की सहायता के लिए राज्य सरकार सचेष्ट है। उन्होंने कहा कि उनके लिए चलाई जा रही विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाए ताकि अधिकाधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

बैठक में बिहार के मुख्य सचिव श्री आमिर सुबहानी, गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री एस० सिद्धार्थ एवं सचिव श्री के० सेंथिल कुमार, वित्त विभाग के प्रधान सचिव श्री अरविन्द कुमार चौधरी, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, मध्य भारत एरिया, जबलपुर (म०प्र०) के जी०ओ०सी० लेफ्टिनेंट जनरल श्री एम०के० दास, बिहार एवं झारखंड सब–एरिया दानापुर कैन्ट के जी०ओ०सी० मेजर विशाल अग्रवाल, सैनिक कल्याण निदेशालय के निदेशक ब्रिगेडियर सहित सेना के विभिन्न वरीय अधिकारीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

सहिष्णुता हमारी संस्कृति का आधार –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 21 अक्तूबर, 2023 को बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री स्व० डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के 136वें जन्म दिवस के अवसर पर बिहार इंटेलेक्चुअल फोरम एवं मेडिवर्सल फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में बिहार इंडस्ट्रीज एसोसियेशन, पटना के सभागार में आयोजित 'बिहार केसरी सम्मान समारोह' में भाग लिया।

इस अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि सहिष्णुता हमारी संस्कृति का आधार रही है। मतभेद होने के बावजूद हममें मन का भेद नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा कि राजनीतिक क्षेत्र में भी संकीर्ण विचारों से ऊपर उठकर सहिष्णुता को स्थापित करना चाहिए। एकजुट होकर ही हम विकास की राह पर आगे बढ़ सकते हैं।

राज्यपाल ने डॉ० श्रीकृष्ण सिंह को बिहार का भाग्य विधाता बताते हुए कहा कि आज उनके पदचिन्हों पर चलने की आवश्यकता है। उनका जीवन पूरी तरह पारदर्शी था। उन्होंने कहा कि बिहार के लोगों को गरीब और पिछड़ा होने जैसी हीन भावना से मुक्त होकर आगे बढ़ने की जरूरत है। यहाँ के लोग काफी क्षमतावान है तथा यहाँ की

डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की 136वीं जयंती समारोह में माननीय राज्यपाल (21 अक्टूबर, 2023)

संस्कृति, इतिहास और परम्पराएँ उन्हें आगे बढ़ने के लिए मजबूत आधार प्रदान करती हैं।

राज्यपाल ने कहा कि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में सुधार लाकर अपने पुराने गौरव को वापस ला सकते हैं। हमें प्रयास करना है कि बिहार के बच्चे पढ़ाई के लिए बाहर नहीं जाएँ, बल्कि बाहर के बच्चे पढ़ने के लिए इस राज्य में आएँ। यह हमारे सामूहिक प्रयत्न से संभव है।

प्रधानमंत्री टी०बी० मुक्त भारत अभियान की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार को वर्ष 2024 के अंत तक टी०बी० से मुक्त करना है। इसके लिए उन्होंने नि–क्षय मित्र बनकर टी०बी० के मरीजों को सहयोग करने को कहा।

इस अवसर पर राज्यपाल ने टी०बी० रोगियों को पोषण किट भी प्रदान किया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में ख्यातिप्राप्त महानुभावों को 'बिहार केसरी' सम्मान से सम्मानित किया।

कार्यक्रम को माननीय विधायक डॉ० संजीव कुमार एवं आचार्य किशोर कुणाल ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर बिहार इंटेलेक्चुअल फोरम एवं मेडिवर्सल फाउण्डेशन के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने कुलपतियों के साथ बैठक की

माननीय राज्यपाल ने कुलपतियों के साथ बैठक की अध्यक्षता की (31 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल – सह – कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 31 अक्तूबर, 2023 को बिहार के विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ राजभवन में बैठक कर स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लंबित परीक्षाफल का प्रकाशन एवं प्रमाण–पत्र का वितरण, सेवान्त लाभ के मामलों का निष्पादन एवं सी०बी०सी०एस० व सेमेस्टर सिस्टम पर आधारित स्नातक पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन की समीक्षा की तथा महत्वपूर्ण निदेश दिये। बैठक में अन्तरविश्वविद्यालय सांस्कृतिक कार्यक्रम 'तरंग' एवं अन्तरविश्वविद्यालय खेलकूद कार्यक्रम 'एकलव्य' को पुनः शुरू कराने का निदेश दिया गया। कोविड महामारी के कारण ये कार्यक्रम फिलहाल बंद थे। राज्यपाल ने तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय द्वारा छात्र दरबार लगाकर छात्र–छात्राओं की समस्याओं के निदान करने की पहल की प्रशंसा की।

राज्यपाल की अध्यक्षता में आहूत इस बैठक में राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

बिहार में कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 25 अक्तूबर, 2023 को बी०आई०ए० हॉल, पटना में आयोजित बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के 79वें वार्षिक समारोह में लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में कृषि आधारित उद्योगों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। बिहार की 13 करोड़ जनसंख्या हमारे लिए बोझ नहीं बल्कि हमारी शक्ति है। इसे सही दिशा देने की जरूरत है। गाँवों में उद्योग लगने से वहाँ के युवाओं को वहीं रोजगार मिल सकेंगे। बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन इस दिशा में कार्य कर सकता है।

बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के 79वें वार्षिक समारोह में माननीय राज्यपाल (25 अक्टूबर, 2023)

राज्यपाल ने औद्योगिक विकास के लिए शहरीकरण को बढ़ावा देने की आवश्यकता से असहमति जताते हुए कहा कि इससे लोग शहरों पर ही ध्यान केन्द्रित करने लगते हैं और गाँव विकास से वंचित रह जाते हैं। शहरों की सुविधाएँ गाँवों में आनी चाहिए और वहाँ कृषि आधारित उद्योग लगाए जाने चाहिए। हमें प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों के बजाए इको फ्रेंडली उद्योगों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि बिहार का जर्दालू आम, मखाना, लीची आदि का निर्यात होने से कई प्रकार के उद्योग यहाँ आ सकते हैं। इसके लिए हमें इनके बेहतर मार्केटिंग, ब्रांडिंग आदि के बारे में सोचना होगा। इस राज्य में पर्यटन की काफी संभावनाएँ हैं और इसे उद्योग के सभी लाभ मिलने चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार के लोगों को गरीब और पिछड़ा होने जैसी हीन भावना से मुक्त होकर विकास के लिए एक सकारात्मक सोच के साथ नई पहल करनी चाहिए। हमें बाहरी मदद पर निर्भर न रहकर अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास करना चाहिए। हम सब सामूहिक प्रयास से बिहार को विकसित बना सकते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि बिहार के औद्योगिक विकास के लिए केन्द्र और राज्य सरकार के बीच समन्वय अत्यन्त आवश्यक है। बी०आई०ए० को भी फिक्की आदि संगठनों के साथ इस संबंध में विचार–विमर्श करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि बी०आई०ए० को उसके 80 वर्ष पूरे होने के अवसर पर अपने उद्देश्यों एवं कार्यों के विषय में सिंहावलोकन करना चाहिए।

राज्यपाल ने इस अवसर पर औद्योगिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देनेवाले उद्यमियों को सम्मानित भी किया।

कार्यक्रम को माननीय उद्योग मंत्री श्री समीर महासेठ, बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री के०पी०एस० केसरी तथा पूर्व अध्यक्ष श्री अरूण अग्रवाल ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर बिहार इंडस्ट्रीज एसोसिएशन के उपाध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री मनीष कुमार एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

हरेक हृदय में देशभक्ति का दीप जले – राज्यपाल

वीर नारियों को सम्मानित करते हुए माननीय राज्यपाल (04 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने वंदे मातरम् फाउंडेशन एवं श्रीराम कर्मभूमि न्यास, सिद्धाश्रम, बक्सर के संयुक्त तत्वावधान में वेटनरी कॉलेज मैदान, पटना में आयोजित "एक दीप राष्ट्र के नाम" सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने भारतमाता के प्रति भक्ति के जागरण की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि 13 करोड़ बिहारवासियों के हृदय में देशभक्ति का दीप जलना चाहिए। उन्होंने दीपावली के अवसर पर देश की सीमा पर तैनात जवानों के लिए प्रत्येक घर में अलग से एक दीप जलाकर उनकी रक्षा के लिए प्रार्थना करने का आवाहन किया।

राज्यपाल ने वीर नारियों को सम्मानित किया तथा मिट्टी के 11 लाख 11 हजार रंगीन दीयों से बनी भारतमाता की आकृति की आरती भी उतारी।

छात्र–छात्राएँ समाज और देश के हित में कार्य करें –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 03 नवम्बर, 2023 को राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT), पटना कैम्पस के दीक्षांत समारोह में पदक एवं उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे देश एवं समाज के हित में कार्य करें। उन्हें इस मुकाम तक पहुँचाने में माता–पिता के अतिरिक्त शिक्षकों, रिश्तेदारों और समाज के अन्य लोगों का अहम योगदान है और उन्हें इनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। उन्हें सिर्फ नौकरी और जीवन की सुख–सुविधाएँ हासिल करने तक ही अपने को सीमित नही रखकर समाज के लिए कार्य करने के बारे में सोचना चाहिए। उन्हें अपने लक्ष्य का निर्धारण इस प्रकार करना चाहिए कि वे आगामी 25 वर्षों के अमृतकाल में देश की प्रगति में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकें।

उन्होंने उनसे कहा कि उनकी कार्यकुशलता, व्यवहार और कार्य निष्पादन की क्षमता के आधार पर ही उनका मूल्यांकन होगा और समाज में उनकी पहचान होगी इसलिए इनके प्रति उन्हें सतत जागरूक रहकर इनमें अभिवृद्धि के लिए प्रयत्नशील

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलश्वजी, पटना के दीक्षांत समारोह में माननीय राज्यपाल (03 नवम्बर, 2023)

रहना होगा। वे निफ्ट जैसे प्रतिष्ठित संस्थान के विद्यार्थी रहे हैं तथा मेधावी और अपने कार्य क्षेत्र में निपुण हैं। उन्हें किसी संस्थान में नौकरी तलाश करने के बजाय स्वरोजगार के विषय में विचार करना चाहिए। राज्यपाल ने उन्हें अच्छा इंसान बनने की सलाह देते हुए कहा कि एक अच्छा व्यक्ति समाज की बेहतर सेवा कर सकता है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो।

राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT), पटना कैम्पस के स्नातक बैच, 2023 के सफल छात्र–छात्राओं को उपाधि प्रदान करने के अतिरिक्त उत्कृष्ट प्रदर्शन करनेवाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक से सम्मानित किया।

कार्यक्रम को निफ्ट के महानिदेशक श्री रोहित कंसल ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर निफ्ट, पटना कैम्पस के निदेशक कर्नल राहुल शर्मा, निफ्ट, नई दिल्ली के प्रो० (डॉ०) सुधा ढ़ींगरा एवं प्रो० (डॉ०) शिंजू महाजन, निफ्ट, पटना कैम्पस के प्राध्यापकगण, शिक्षकेत्तर कर्मचारीगण, विद्यार्थीगण एवं उनके अभिभावक तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

बिहार की अर्थव्यवस्था में मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान – राज्यपाल

मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से आयोजित 'पधारो म्हारो देस' कार्यक्रम में माननीय राज्यपाल (31 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, पटना नगर शाखा द्वारा न्यू पटना क्लब में 31 दिसम्बर, 2023 को आयोजित 'पधारो म्हारो देस' कार्यक्रम में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि बिहार की अर्थव्यवस्था में मारवाड़ी समाज का उल्लेखनीय योगदान है। स्वास्थ्य एवं शिक्षा सहित मानव जीवन को स्पर्श करनेवाले सभी क्षेत्रों में इस समाज के लोगों ने योगदान दिया है। देश भर के लोग उनपर विश्वास करते हैं। उन्होंने उनसे कहा कि वे इस विश्वास को बनाये रखें।

राज्यपाल ने अयोध्या में बन रहे राम मंदिर का उल्लेख करते हुए कहा कि यह केवल किसी धर्म विशेष का नहीं बल्कि समस्त मानव संस्कृति का मंदिर है, यह राष्ट्र मंदिर है।

कार्यक्रम को भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री सम्राट चौधरी ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री जुगल किशोर चौधरी, सम्मेलन के पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

मौलिक अधिकारों एवं मौलिक कर्त्तव्यों के साथ–साथ मानवीय मूल्यों का होना भी आवश्यक – राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 26 नवम्बर, 2023 को राजभवन के दरबार हॉल में संविधान दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि मौलिक अधिकारों के साथ–साथ मौलिक कर्त्तव्यों की भी आवश्यकता होती है। परन्तु, मानवीय मूल्यों (Human Values/Fundamental Values) का होना भी अत्यन्त आवश्यक हैं जिन्हें बरकरार रखने के लिए संविधान की जरूरत होती है। देश, समाज और परिस्थिति के अनुसार मौलिक अधिकारों में भिन्नता हो सकती है, परन्तु मानवीय मूल्य हमेशा एक समान ही रहते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि संविधान द्वारा प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता हमारी परम्परा में रही है। उन्होंने बिहार के महिषी में शंकराचार्य और मंडन मिश्र के बीच हुए शास्त्रार्थ को इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण बताते हुए कहा कि इसमें असहमति के साथ–साथ सहिष्णुता एवं एक–दूसरे के विचारों के प्रति सम्मान का भाव था। आज हमें इसकी जरूरत है।

उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान में इसके निर्माताओं और हमारे स्वतंत्रता सेनानियों की आशाओं और आकांक्षाओं का समावेश है। हमें इसके भाव को समझने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (26 नवम्बर, 2023)

इस अवसर पर राज्यपाल के नेतृत्व में भारत के संविधान की उद्देशिका का समूह पाठ किया गया तथा उपस्थित महानुभावों ने इसके अनुपालन का संकल्प लिया। उन्होंने संविधान दिवस की शुभकामनाएँ भी दी।

कार्यक्रम को पटना उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री पी०बी० बजंथरी एवं चाणक्या नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, पटना के कुलपति प्रो० फैजान मुस्तफा ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर पटना उच्च न्यायालय के अन्य न्यायाधीशगण, बिहार के मुख्य सचिव सहित राज्य सरकार के विभिन्न पदाधिकारीगण, राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

राज्यपाल ने सम्पतचक के चिपुरा से विकसित भारत संकल्प यात्रा रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया

माननीय राज्यपाल ने सम्पतचक से विकसित भारत संकल्प यात्रा रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया (30 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 30 नवम्बर, 2023 को माननीय प्रधानमंत्री के 'विकसित भारत संकल्प यात्रा के लाभार्थियों से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये संवाद कार्यक्रम' में पटना जिलान्तर्गत सम्पतचक प्रखंड के पंचायत सरकार भवन, चिपुरा से भाग लिया। राज्यपाल ने इस अवसर पर विकसित भारत संकल्प यात्रा रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के लाभार्थी को इंश्योरेंस क्लेम, सुकन्या समृद्धि योजना के लाभार्थी को पासबुक एवं किसान सम्मान योजना के लाभार्थियों को के०सी०सी० वितरित किया। राज्यपाल ने प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के लाभार्थियों से बातचीत भी की। इस अवसर पर जन–प्रतिनिधिगण, पदाधिकारीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय करें- राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 11 दिसम्बर, 2023 को राजभवन के राजेन्द्र मंडप में 'विकसित भारत @2047' पर आयोजित कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि सही दिशा में प्रयत्न करने पर भारत निश्चित रूप से एक विकसित राष्ट्र बनेगा। इसके लिए आवश्यक है कि हम सकारात्मक सोच के साथ अपने कार्य विशेष के लिए अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारी तय करें जो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उपयोगी साबित हो सके। उन्होंने देश को विकसित बनाने के लिए भारत में निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने को कहा। इससे हमारी अर्थव्यवस्था मजबूत होगी।

उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने हमें आगामी 25 वर्षों के अमृत काल में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य दिया है और इसकी प्राप्ति के लिए सामूहिक प्रयास आवश्यक है। राज्यपाल ने उनके संबोधन का उल्लेख करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का निर्माण है, जिससे समाज और राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकेगा। आज हमें इस

कार्यशाला में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (11 दिसम्बर, 2023)

विषय पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने शिक्षाविदों से कहा कि समाज एवं देश के पुनर्निर्माण का लक्ष्य उनके सामने है। राज्यपाल ने समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में उनकी भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि वे बच्चों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें योग्य नागरिक बनायें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को शोध एवं अनुसंधान पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री जी किसानों की आय दोगुनी करना चाहते हैं। प्राकृतिक खेती अपनाने से ऐसा संभव है। यह भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

इससे पूर्व राज्यपाल ने माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'विकसित भारत @2047 : युवाओं की आवाज' के शुभारंभ कार्यक्रम में वीडियो कॉन्फ्रेंन्सिंग के जरिये राजभवन से भाग लिया। बिहार के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, शैक्षणिक संस्थानों के निदेशकगण एवं संकाय सदस्यों ने भी इस कार्यक्रम में वेबकास्ट के जरिये राजभवन के राजेन्द्र मंडप में उपस्थित होकर भाग लिया।

औद्योगिक विकास के लिए सामूहिक प्रवास जरूरी - राज्यपाल

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (11 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 11 दिसम्बर, 2023 को लघु उद्योग भारती की बिहार प्रदेश इकाई द्वारा ज्ञान भवन, पटना में आयोजित लघु उद्योग मेला–2023 के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में औद्योगिक विकास के लिए सरकार, विपक्ष एवं अन्य लोगों को एक साथ मिलकर विचार करना चाहिए, निवेश के लिए उपयुक्त वातावरण का निर्माण किया जाना चाहिए तथा निवेशकों को सिंगल विंडो सिस्टम के तहत सारी सुविधाएँ मिलनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि बिहार के लोग प्रतिभावान और परिश्रमी हैं तथा उनकी क्षमता का उपयोग इस राज्य के विकास में होना चाहिए। बिहार के अनेक बड़े उद्यमी राज्य से बाहर निवेश कर रहे हैं। अनुकूल वातावरण मिलने पर वे इस राज्य में भी अपना उद्योग लगा सकते हैं। बिहार में औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक है कि इसके लिए विभिन्न संस्थाओं के साथ विचार–विमर्श कर उनकी कठिनाईयों को जानें एवं उनके सुझावों पर विचार करें। निवेशकों को सभी आवश्यक सुविधाएं भी आसानी से उपलब्ध होनी चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि हमें अपने देश में निर्मित उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए। इससे भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी। उन्होंने कहा कि अब विश्व के अनेक देश भारतीय करेंसी में व्यापार एवं विनिमय करने लगे हैं। यह भारतीय मुद्रा के मजबूत होने का द्योतक है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने महिला उद्यमियों को सम्मानित भी किया।

कार्यक्रम को केन्द्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे, उद्योग मंत्री श्री समीर कुमार महासेठ एवं एम०एस०एम०ई० के निदेशक श्री प्रदीप कुमार ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर लघु उद्योग भारती के प्रदेश अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर भीमसेरिया, प्रदेश महामंत्री श्री सुमन शेखर एवं लघु उद्योग भारती के अखिल भारतीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री काशीनाथ सिंह, उद्यमीगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

छात्र–छात्राएँ भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में सहभागी बनें –राज्यपाल

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 12 दिसम्बर, 2023 को श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल, पटना में आयोजित पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय के तृतीय दीक्षांत समारोह में पदक एवं उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि वे भारत को वर्ष 2047 तक विकसित देश बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहभागी बनें। वे सिर्फ अपनी एवं अपने परिवार की सुख–सुविधा हेतु धनार्जन तक ही अपने को सीमित नहीं रखें, बल्कि उनके जीवन का लक्ष्य देश एवं समाज की सेवा करना होना चाहिए।

राज्यपाल ने छात्र–छात्राओं से कहा कि प्रारंभ से लेकर आज के दीक्षांत समारोह में पदक एवं उपाधि हासिल करने तक की यात्रा में उन्हें परिवार के सदस्यों, अभिभावकों, मित्रों और समाज के अनेकानेक लोगों का विभिन्न प्रकार से सहयोग मिला है। वे उन सब के प्रति कृतज्ञ रहते हुए उनकी चिन्ता करें और उनके लिए कुछ करें। समाज उन्हें आशा भरी निगाह से देख रहा है। उनके व्यक्तित्व, सौम्य व गरिमापूर्ण आचरण एवं उत्तम चरित्र से यह

दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (12 दिसम्बर, 2023)

परिलक्षित होना चाहिए कि वे एक प्रतिष्ठित संस्थान से उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हैं।

उन्होंने 'विकसित भारत @2047 : युवाओं की आवाज' के शुभारंभ कार्यक्रम के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री के संबोधन को उद्धृत करते हुए कहा कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का निर्माण है, जिससे समाज और राष्ट्र का निर्माण संभव हो सकेगा। बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो समाजोपयोगी हो तथा उन्हें अपनी मिट्टी से जोड़कर रख सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 इसमें सहायक है।

राज्यपाल ने कहा कि परिवार की देखभाल करने एवं इसके अन्य सदस्यों के जीवन को सहज एवं सुखी बनाने में गृहिणियों की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि वे अर्थोपार्जन नहीं कर पाती हैं, परन्तु उनके योगदान को जी०डी०पी० के आकलन में शामिल किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने दीक्षांत समारोह में सफल छात्र–छात्राओं को उपाधि एवं स्वर्ण पदक प्रदान किया। उन्होंने उन्हें भविष्य की शुभकामनाएँ दी। ■

महावीर कैंसर संस्थान के रजत जयंती समारोह में शामिल हुए राज्यपाल

रजत जयंती स्मारिका 'मुस्कान' का विमोचन करते माननीय राज्यपाल (12 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 12 दिसम्बर, 2023 को महावीर कैंसर संस्थान, पटना के रजत जयंती समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि कैंसर की शीघ्र पहचान इस बीमारी के सफल उपचार में सहायक होता है। उन्होंने कहा कि शोध एवं अनुसंधान से ऐसा संभव हो सकता है। कैंसर की शीघ्र पहचान कर मरीजों का इलाज घर पर ही सुलभ होना इस क्षेत्र में अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण पड़ाव होगा और इस दिशा में प्रयास किया जाना चाहिए।

राज्यपाल ने महावीर कैंसर संस्थान के चिकित्सकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके सामर्थ्य एवं कुशलता पर उन्हें पूर्ण विश्वास है और आनेवाले दिनों में महावीर कैंसर संस्थान रोगियों को बेहतर सेवा दे सकेगा। उन्होंने कहा कि इस संस्थान के चिकित्सकों ने पूरे देश के सामने सेवा भाव के साथ रोगियों की सेवा का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है वह प्रेरक है।

उन्होंने कहा कि भगवान महावीर हनुमान जी सर्वशक्तिमान हैं और उन्हीं की प्रेरणा से हम समाज के लिए काम करते हैं। उन्होंने श्री महावीर स्थान न्यास समिति के सचिव आचार्य श्री किशोर कुणाल की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह समाज सेवा के मूर्तिमान उदाहरण हैं तथा उन्होंने महावीर मंदिर के माध्यम से धर्म को परोपकार का साधन बनाकर रोगियों की सेवा का अद्भुत मिसाल पेश किया है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने मोलेक्यूलर लैब Mahavir Karkinos Advanced Centre for Cancer Diagnostic & Research का उद्घाटन किया। उन्होंने संस्थान की रजत जयंती स्मारिका 'मुस्कान' का विमोचन भी किया।

कार्यक्रम को आचार्य श्री किशोर कुणाल ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर महावीर कैंसर संस्थान की चिकित्सा निदेशक डॉ० मनीषा सिंह, निदेशक (प्रशासन) डॉ० बी० सन्याल, चिकित्सा अधीक्षक डॉ० एल०बी० सिंह, चिकित्सकगण एवं चिकित्सा कर्मीगण तथा अन्य लोग उपस्थित थे। ■

किसानों को मिलना चाहिए कृषि योजनाओं का लाभ

तीन दिवसीय बिहार दौरे पर आई माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का पटना हवाई अड्डे पर स्वागत करते माननीय राज्यपाल (18 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 18 अक्तूबर, 2023 को माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू द्वारा बापू सभागार, पटना में चतुर्थ कृषि रोड मैप, बिहार, 2023–2028 के शुभारम्भ के अवसर पर कहा कि किसानों को कृषि संबंधी सभी योजनाओं एवं कार्यक्रमों से अवगत होना चाहिए तथा इनका लाभ उन्हें मिलना चाहिए।

राज्यपाल ने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर बल देते हुए कहा कि इसे इस कृषि रोड मैप का अंग बनाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती में कम लागत में अधिक उत्पादन होता है। इससे किसानों की आय को दुगुनी करने में मदद मिलेगी। इस खेती के लिए किसानों को प्रेरित करने के साथ–साथ उनका उचित मार्गदर्शन किया जाना चाहिए। उन्होंने किसानों को खेती की नई तकनीक अपनाने को कहा।

राज्यपाल ने कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है और बिहार भी इससे अलग नहीं है। बिहार के काफी लोग कृषि से जुड़े हुए हैं।

इससे पूर्व माननीय राष्ट्रपति ने चतुर्थ कृषि रोड मैप, बिहार, 2023–2028 का शुभारंभ किया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को माननीय राष्ट्रपति, माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय उप मुख्यमंत्री ने भी संबोधित किया।

कार्यक्रम में माननीय विधान सभाध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, विभिन्न मंत्रीगण, जन–प्रतिनिधिगण, पदाधिकारीगण एवं बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से आए किसान तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

चतुर्थ कृषि रोडमैप का शुभारंभ करते माननीय राष्ट्रपति, माननीय राज्यपाल, माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय उपमुख्यमंत्री (18 अक्टूबर, 2023)

राष्ट्रपति के सम्मान में रात्रि भोज का आयोजन

राष्ट्रपति के सम्मान में राजभवन में आयोजित रात्रिभोज में माननीय राष्ट्रपति व माननीय राज्यपल (18 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 18 अक्तूबर, 2023 को माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के सम्मान में राजभवन के राजेन्द्र मंडप में रात्रि भोज का आयोजन किया, जिसमें माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं अन्य मंत्रीगण, बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति श्री देवेश चन्द्र ठाकुर, बिहार विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री अवध बिहारी चौधरी, बिहार के माननीय सांसदगण, पटना उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायाधीश एवं अन्य न्यायाधीशगण, पटना में पदस्थापित केन्द्र सरकार के पदाधिकारीगण, विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

इस अवसर पर राष्ट्रपति और राज्यपाल ने सभी आमंत्रित महानुभावों के साथ व्यक्तिगत रूप से मुलाकात की।

एम्स, पटना का प्रथम दीक्षांत समारोह

समर्पण से करें समाज सेवा

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 19 अक्तूबर, 2023 को माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS), पटना के प्रथम दीक्षांत समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर उपाधि प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि वे पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ समाज की सेवा करें।

उन्होंने कहा कि एम्स एक प्रतिष्ठित संस्थान है और इसकी अपनी विरासत और परम्पराएँ हैं। यहाँ के विद्यार्थियों की अपनी विशेषताएँ होती हैं। राज्यपाल ने डिग्री प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों से कहा कि उनके आचरण एवं सेवा भाव से इस संस्थान की विशिष्टता परिलक्षित होनी चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं होता है। डिग्री प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियों को निरंतर नये विषयों को सीखते हुए देश एवं समाज हित में उनका उपयोग करना चाहिए। उन्होंने उपाधि एवं मेडल प्राप्त करनेवाले छात्र–छात्राओं को बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

एम्स पटना के प्रथम दीक्षांत समारोह में माननीय राष्ट्रपति, माननीय राज्यपाल एवं माननीय मुख्यमंत्री
19 अक्टूबर, 2023

कार्यक्रम को माननीय राष्ट्रपति के अतिरिक्त मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार तथा केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री डॉ० भारती प्रवीण पवार ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर विभिन्न जन प्रतिनिधिगण, बिहार के मुख्य सचिव श्री आमिर सुबहानी एवं अन्य वरीय पदाधिकारीगण, एम्स, पटना के अध्यक्ष प्रो० (डॉ०) सुब्रत सिन्हा, कार्यकारी निदेशक प्रो० (डॉ०) जी०के० पाल व चिकित्सकगण, छात्र–छात्राएँ एवं अन्य लोग उपस्थित थे। ■

माननीय राज्यपाल ने माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ तख्त श्री हरिमंदिर जी, पटना साहिब जाकर मत्था टेका। इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर भी उपस्थित थीं (18 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल, माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ महाबोधि मंदिर, बोधगया में भगवान बुद्ध का दर्शन एवं पूजन करते हुए (20 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल, माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के प्रथम दीक्षांत समारोह में उपाधि प्रदान करते हुए (20 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल, माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के साथ दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गया के तृतीय दीक्षांत समारोह में उपाधि प्रदान करते हुए (20 अक्टूबर, 2023)

जम्मू एवं कश्मीर / लद्दाख दिवस

एक सूत्र में बंधी है देश की विरासत

कार्यक्रम में अतिथियों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (31 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने राजभवन, बिहार के दरबार हॉल में 31 अक्तूबर, 2023 को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश की विरासत एक सूत्र में बँधी हुई है। भारत के विभिन्न राज्यों में खान–पान, रहन–सहन, वेशभूषा आदि विविधताओं के बावजूद कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हमारा देश एक है। उन्होंने कहा कि जब हमारी एकता मजबूत होगी तभी विश्व में हमारी श्रेष्ठता भी बढ़ेगी। राज्यपाल ने इस अवसर पर भारतमाता के चित्र पर माल्यार्पण किया। कार्यक्रम में लद्दाख की छात्राओं द्वारा वहाँ की संस्कृति पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर लेडी गवर्नर श्रीमती अनघा आर्लेकर, विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, बिहार में पदस्थापित जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख के पदाधिकारीगण एवं उनके परिजन, जम्मू एवं कश्मीर तथा लद्दाख की छात्र–छात्राएँ तथा राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण एवं कर्मीगण उपस्थित थे।

उत्तराखंड दिवस

आयोजन से राष्ट्रीय एकता का प्रकटीकरण

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 09 नवम्बर, 2023 को राजभवन, बिहार के दरबार हॉल में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित उत्तराखंड के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी भारतवासी राष्ट्रीय एकता के सूत्र से बँधे हुए हैं, हम सब एक हैं। इस भाव को उजागर करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' जैसे कार्यक्रमों के आयोजन से हमारी राष्ट्रीय एकता की भावना का प्रकटीकरण होता है।

राज्यपाल ने कहा कि भारत जब–जब एक होता है तब–तब श्रेष्ठ होता है। एकत्व का भाव मजबूत रहने पर ही हम श्रेष्ठ रहेंगे। हमारे देश की गुलामी का कारण एकता का अभाव ही रहा है। उन्होंने कहा कि सांस्कृतिक एकता हमारे मन के भीतर होती है। हम सब भारतमाता की संतान हैं और हमें एकत्व के भाव को जागृत करने की आवश्यकता है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर भारतमाता के चित्र पर माल्यार्पण भी किया।

उत्तराखंड स्थापना दिवस समारोह में माननीय राज्यपाल (09 नवम्बर, 2023)

झारखंड दिवस

बिहार और झारखंड के बीच गहरा नाता

राजभवन में झारखंड दिवस समारोह में माननीय राज्यपाल (15 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 15 नवम्बर, 2023 को राजभवन, बिहार के राजेन्द्र मंडप में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित झारखंड के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार और झारखंड के बीच गहरा नाता है। झारखंड बिहार का भाई है और बिहार को झारखंड के विकास के लिए उसके साथ खड़ा रहने की जरूरत है। राज्यपाल ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयन्ती और जनजातीय गौरव दिवस के दिन झारखंड का स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। बिरसा मुंडा का पूरा जीवन अंग्रेजों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करते हुए बीता। उन्होंने जनजातीय समुदाय के लोगों को इकट्ठा कर पूरी ताकत से लड़ते हुए अंग्रेजों को कठिन चुनौती दी। उनके अतिरिक्त अन्य आदिवासी नेताओं ने भी अंग्रेजों के साथ संघर्ष किया। हम ऐसे अनेकानेक लोगों को नही जानते हैं जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना बलिदान दिया। उस सब के कारण ही देश को आजादी मिली। राज्यपाल ने इस अवसर पर भारतमाता एवं भगवान बिरसा मुंडा के चित्र पर माल्यार्पण भी किया।

पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं चंडीगढ़ दिवस

सांस्कृतिक व भावनात्मक रूप से हम एक

कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति (16 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 16 नवम्बर, 2023 को राजभवन, बिहार के राजेन्द्र मंडप में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं चंडीगढ़ के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि देश के सभी राज्यों की अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं, परन्तु उनकी पहचान भारत की विशेषता के रूप में है। हमारी भाषा, वेश–भूषा, रहन–सहन, खान–पान इत्यादि भले ही भिन्न हैं, लेकिन सांस्कृतिक और भावनात्मक रूप से हम सभी एक हैं और हमारा देश एक है। हमारी एकता का विचार हमारे हृदय में है। उन्होंने कहा कि एकता का सूत्र कमजोर होने के कारण ही भारत का विभाजन हुआ।

राज्यपाल ने विद्यालयों में विद्यार्थियों द्वारा अपने देश के संबंध में प्रतिज्ञा (Pledge) लेने की चर्चा करते हुए कहा कि हम सभी भारतमाता की संतान हैं और यही हमारी एकता का सूत्र है जिसे सुदृढ़ बनाने की जरूरत है। एकता के कारण ही भारत श्रेष्ठ है।

इस अवसर पर रंगारंग पंजाबी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी हुआ।

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, लक्षद्वीप एवं अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह दिवस

सांस्कृतिक तादात्मय में ही हमारी एकता

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 17 नवम्बर, 2023 को राजभवन, बिहार के दरबार हॉल में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, लक्षद्वीप एवं अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भारत के लगभग सभी राज्यों के लोग बिहार में रहकर व्यापार, सरकारी सेवा, पढ़ाई एवं आजीविका आदि के लिए कार्य करते हैं और इस राज्य ने सबको प्रेम, सम्मान और अपनापन दिया है। दूसरे राज्यों से यहाँ आकर लोग अपने को बिहारी मानने लगते हैं और यहीं की भाषा–बोली और संस्कृति को अपना लेते हैं।

उन्होंने कहा कि बिहार काफी अच्छा है और यहाँ आने पर ही इसका पता चलता है। हमारा दायित्व है कि हम बिहार की अच्छाई के बारे में लोगों को बताएँ और कुछ प्रदेशों में बने बिहार की नकारात्मक छवि को बदलने का प्रयास करें।

राजभवन में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, लक्षद्वीप और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह दिवस समारोह करते माननीय राज्यपाल (17 नवम्बर, 2023)

नागालैंड एवं असम दिवस

साझा संस्कृति हमारी पहचान

कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (01 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 01 दिसम्बर, 2023 को राजभवन, बिहार के दरबार हॉल में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित नागालैंड तथा असम के स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि देश के सभी राज्यों की संस्कृति हमारी अपनी संस्कृति है। भारत के सभी राज्यों में अन्य प्रदेशों के लोग रहते हैं और वे धीरे–धीरे वहाँ की भाषा, बोली और अन्य सांस्कृतिक अवयवों को अपना लेते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि हम सभी भारतवासी आपस में एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और इस एकता के सूत्र के कारण ही भारत के किसी एक राज्य के लोगों को तकलीफ होने अथवा उनपर विपत्ति आने पर दूसरे दूरस्थ राज्यों के लोगों को पीड़ा होती है।

राज्यपाल ने कहा कि चाहे हम किसी भी राज्य के मूल निवासी हों, परन्तु जिस राज्य में रह रहे हैं वहाँ के विकास में योगदान देना हमारा दायित्व है।

गयाजी सेवा भारती द्वारा गया में आयोजित 'सामूहिक कन्या पूजन' कार्यक्रम में कन्याओं का पूजन करते माननीय राज्यपाल (22 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने मस्तीचक, सारण में गायत्री परिवार द्वारा आयोजित 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में भाग लिया तथा अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि समाज के विकास के लिए शिक्षा और स्वास्थ्य पर अत्यधिक ध्यान देना आवश्यक है। स्वास्थ्य सेवाएँ गाँवों तक पहुँचनी चाहिए। उन्होंने अच्छा इंसान बनने पर जोर देते हुए कहा कि एक अच्छा व्यक्ति ही समाज की बेहतर सेवा कर सकता है चाहे वह किसी भी क्षेत्र में कार्यरत हो (02 नवम्बर, 2023)

नालन्दा खुला विश्वविद्यालय, नालन्दा एवं बिहार मैथमैटिकल सोसायटी के संयुक्त तत्वावधान में नालन्दा में ''एक्सप्लोरिंग एक्सिलेन्स इन मैथेमेटिकल साईंस'' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (04 नवम्बर, 2023)

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा महाराजा स्टेडियम, बेतिया में ''34वाँ अखिल भारतीय खेलकूद (एथलेटिक्स) समारोह, 2023'' का ध्वजारोहण कर उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (05 नवम्बर, 2023)

विशाखापट्टनम में आयोजित ''यूथ हॉस्टल्स एसोसियेशन ऑफ इंडिया'' के प्लेटिनम जुबली समारोह को सम्बोधित करते मा. राज्यपाल (07 नवम्बर, 2023)

तृतीय जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'विकसित भारत संकल्प यात्रा' के शुभारंभ के लाइव प्रसारण कार्यक्रम के उपरांत भभुआ, कैमूर से रथ को रवाना करते माननीय राज्यपाल (15 नवम्बर, 2023)

बिहार योग विद्यालय, मुंगेर के परिभ्रमण के दौरान वहाँ के परमाचार्य पद्म भूषण स्वामी निरंजनानंद सरस्वती से मुलाकात करते माननीय राज्यपाल (22 नवम्बर, 2023)

डॉ० जगन्नाथ मिश्र महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर के परिसर में नवनिर्मित इंडोर स्टेडियम का उद्घाटन एवं डॉ० महाचन्द्र प्रसाद सिंह अकादमिक भवन का शिलान्यास करते माननीय राज्यपाल (23 नवम्बर, 2023)

बोधगया में आयोजित 18वें अंतर्राष्ट्रीय टिपिटका जप महोत्सव में माननीय राज्यपाल (02 दिसम्बर, 2023)

मुंगेर विश्वविद्यालय, मुंगेर के प्रथम दीक्षांत समारोह का शुभारंभ करते हुए माननीय राज्यपाल-सह-कुलाधिपति श्री राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर (20 दिसम्बर, 2023)

वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा की सीनेट की बैठक को संबोधित करते माननीय राज्यपाल (23 दिसम्बर, 2023)

यूथ हॉस्टल एसोसिएशन ऑफ इंडिया, बिहार राज्य शाखा द्वारा आयोजित 'राजगीर फैमिली कैम्प'का उद्घाटन करते माननीय राज्यपाल (24 दिसम्बर, 2023)

बी०बी०एम० महाविद्यालय, ओकरी, जहानाबाद में स्व० डॉ० महेन्द्र प्रसाद जी की प्रतिमा के अनावरण समारोह का शुभारंभ करते माननीय राज्यपाल (27 दिसम्बर, 2023)

भारत की विविधता में ही हमारी एकता –राज्यपाल

"हमारे देश के विभिन्न राज्यों की भाषा, वेशभूषा, रहन–सहन, खान–पान इत्यादि में भिन्नता है किन्तु इस विविधता में भी हमारी एकता है। जब–जब भारत एक होता है, तब–तब यह श्रेष्ठ बनता है। एक परिवार के विभिन्न सदस्यों की तरह हमारे देश के लोगों के बीच भी मतभिन्नता हो सकती है किन्तु कोई विपत्ति आने पर हम सभी भारतवासी मिलकर उसका मुकाबला करते हैं।" – यह बातें माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता एवं बिहार सरकार के कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 21 दिसम्बर, 2023 को प्रेमचंद रंगशाला, पटना में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय नृत्य, शिल्प एवं व्यंजन उत्सव का कार्यक्रम 'इंद्रधनुष' के उद्घाटन के अवसर पर कही।

उद्घाटन के बाद 'इन्द्रधनुष' कार्यक्रमको संबोधित करते माननीय राज्यपाल (21 दिसम्बर, 2023)

राज्यपाल ने कहा कि हम सभी भारतवासी आपस में एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं और इस एकता के सूत्र के कारण ही भारत के किसी एक राज्य के लोगों को तकलीफ होने अथवा उनपर विपत्ति आने पर दूसरे दूरस्थ राज्यों के लोगों को पीड़ा होती है। उन्होंने कहा कि उत्तरकाशी सुरंग में फँसे सभी 41 मजदूरों के लिए पूरा देश चिंतित था और उनसे परिचित नहीं होने के बावजूद सभी देशवासी उनके सकुशल बाहर निकलने के लिए दुआएँ कर रहे थे तथा उनके बाहर आने पर सब ने खुशी जाहिर की। यह हमारे देशवासियों का एक–दूसरे के प्रति प्रेम और अपनापन की भावना तथा आपसी एकता का प्रतीक है जिसे बनाए रखने की आवश्यकता है। एकता का सूत्र ही हमारी शक्ति है। पूरा भारत एक है और इसीलिए यह श्रेष्ठ है। हमारी एकता में ही भारत की श्रेष्ठता है।

इस अवसर पर राज्यपाल ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देखी तथा व्यंजन उत्सव एवं शिल्प मेला के विभिन्न स्टॉल्स का भी अवलोकन किया।

कार्यक्रम को कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के माननीय मंत्री श्री जितेन्द्र कुमार राय ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर विभाग की अपर मुख्य सचिव श्रीमती हरजोत कौर एवं पूर्व क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक श्री आशीष कुमार गिरि तथा अन्य लोग उपस्थित थे।

इको फ्रेंडली उद्योगों को दें बढ़ावा –राज्यपाल

एसोचौम-बिहार के सीएसआर पहल समारोह में माननीय राज्यपाल (22 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल श्री राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर ने 22 दिसम्बर, 2023 को मालसलामी, पटना सिटी में आयोजित ASSOCHAM & Bihar's CSR Initiative Ceremony को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में इको फ्रेंडली उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए ताकि हम प्रदूषण की समस्या से बचे रहें। इस दृष्टिकोण से कृषि आधारित उद्योग हमारे लिए अधिक उपयुक्त होंगे। हमें ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिसमें स्वरोजगार को बढ़ावा मिले।

उन्होंने कहा कि कॉरपोरेट सोशल रेस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) की अवधारणा हमारे ऋषियों की संकल्पना का ही नया रूप है। हमारे मनीषियों ने हमें बताया है कि हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के बाद आय के शेष अंश को समाज के लिए समर्पित कर दें। हमारी संस्कृति हमें बताती है कि समाज के लिए कुछ करना हमारा स्वाभाविक धर्म है। हमें इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि औद्योगिक क्षेत्र समाज एवं देश की जरूरत के अनुरूप कार्य करे।

इस अवसर पर राज्यपाल ने स्वरोजगार प्रोत्साहन योजना अंतर्गत लाभुकों को स्वचालित सिलाई मशीन का वितरण भी किया।

कार्यक्रम को माननीय उद्योग मंत्री श्री समीर कुमार महासेठ एवं पूर्व मंत्री व विधायक श्री नंद किशोर यादव ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर एसोचौम, बिहार, बिहार इंडस्ट्रीज एसोसियेशन एवं श्रीबिहारी जी मिल्स प्रा० लि० के पदाधिकारीगण तथा विभिन्न व्यावसायिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधिगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

महर्षि विश्वामित्र : राजर्षि से बने ब्रह्मर्षि

जहां भारत में ऋषियों की सुदीर्घ परंपरा रही है, वहीं प्राचीन काल से ही बिहार की भूमि तप और साधना के लिए महिमा मंडित रही है। यहाँ की पावन भूमि पर राजर्षि से ब्रह्मर्षि बने गुरु विश्वामित्र ने अपने पुरुषार्थ के बल पर करुष प्रदेश के अरण्य में घोर तपस्या कर काम, क्रोध जैसे अग्नि से मुक्ति पायी। बिहार के बक्सर में इन्होंने सिद्धाश्रम की स्थापना की, जहाँ भगवान राम और उनके अनुज लक्ष्मण ने दिव्यास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। यह विश्व का प्रथम विद्याध्ययन संस्थान था। यहीं पर राम ने आततायी राक्षसी ताड़का व सुबाहु का वध किया था और वहीं मारीच को सात समुद्र पार वाण पर चढ़ा कर फेंक दिया था। गुरु विश्वमित्र ने ही श्रीराम को सब प्रकार की विद्याएं दी और मिथिला नरेश महाराज विदेह जनक की सुपुत्री श्री सीताजी से विवाह कराया। गुरु कृपा से ही त्रैलोक्य को कंपाने वाले रावण का वध भी किया।

सर्वविदित है कि भारतीय ऋषियों ने अपने ज्ञान और तपस्या के बल पर भारतीय धर्म और संस्कृति को समृद्ध किया है। इसी में एक नाम महर्षि विश्वामित्र का है। गायत्री मंत्र के द्रष्टा महर्षि विश्वामित्र ने अपनी तपस्या के बल पर क्षत्रियत्व से ब्राह्मणत्व धारण किया था। वैदिक चिंतन में विश्वामित्र का विशेष स्थान है। महर्षि विश्वामित्र ही ऋग्वेद के तीसरे मंडल के द्रष्टा हैं। वैदिक और पौराणिक कथा प्रसंगों में विश्वामित्र के कार्यों का उल्लेख किया गया है।

पौरणिक आख्यानों के अनुसार महर्षि विश्वामित्र ने सिद्धाश्रम (बक्सर) में तप साधना की। यही गंगा तट पर उन्हें विश्व मंगल हेतु गायत्री मंत्र का प्रत्यक्षीकरण हुआ। विश्वामित्र वैदिक काल के विख्यात ऋषि (योगी) थे। ऋषि विश्वामित्र बड़े ही प्रतापी और तेजस्वी महापुरुष थे। ऋषि धर्म ग्रहण करने के पूर्व वे बड़े पराक्रमी और प्रजावत्सल नरेश थे।

महर्षि अपने सतत लगनशीलता से सप्तऋषियों में अग्रगण्य हुए और वेदमाता गायत्री के द्रष्टा ऋषि हुए। इनका समस्त जीवन घोर साधना, तपस्या और परोपकार में ही व्यतीत हुआ। इनके जीवन, साधना और तपस्या तथा क्रोध से जुड़े कई आख्यान एवं प्रसंग विविध ग्रंथों में उल्लेखित हैं। प्रजापति के पुत्र कुश, कुश के पुत्र कुशनाभ और कुशनाभ के पुत्र राजा गाधि थे। विश्वामित्र जी उन्हीं गाधि के पुत्र थे। विश्वामित्र शब्द विश्व और मित्र से बना है जिसका अर्थ है– सबके साथ मैत्री अथवा प्रेम।

महर्षि विश्वामित्र के जन्म की कथा

प्राचीन काल में एक धर्मात्मा राजा कुश थे। उसकी पुत्री का नाम वेदर्भि था। इनके चार पुत्र हुए जिसमें एक का नाम कुशनाभ था। कुशनाभ ने पुत्रकामेष्टि यज्ञ किया जिससे गाधि नामक पुत्र हुआ। गाधि की पुत्री का नाम सत्यवती था। सत्यवती का विवाह भृगु ऋषि के पुत्र ऋचीक के साथ हुआ। विवाह के उपरांत भृगु ऋषि ने सत्यवती को पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया और उनसे वर मांगने के लिए कहा। सत्यवती ने अपनी माता के लिए पुत्र की कामना की। भृगु ऋषि ने सत्यवती को दो चरु (यज्ञ का प्रसाद) पात्र दिए और कहा कि एक तुम्हारे लिए है और दूसरा तुम्हारी माता के लिए। जब तुम दोनों ऋतु स्नान कर लेना तो पुत्र की कामना लेकर तुम गूलर के पेड़ का आलिंगन करना और तुम्हारी माता पीपल का आलिंगन करेगी। जब तुम इस चरु पात्र का सेवन करोगी तुम्हारी कामना पूर्ण होगी।

गलती से चरु पात्र बदल गया परिणामतः जो चरु सत्यवती को ग्रहण करना था उसे उसकी माता ने ग्रहण कर लिया। इससे सत्यवती और उसकी मां से जन्म लेने वाले शिशुओं का अदल– बदल हो गया। सत्यवती की माता के गर्भ से विश्वरथ का जन्म हुआ

जो बाद में चलकर महर्षि विश्वामित्र हुए। वहीं सत्यवती के गर्भ से सप्त ऋषियों में स्थान पाने वाले महर्षि जमदग्नि का जन्म हुआ। जमदग्नि के पांचवें पुत्र भगवान परशुराम थे। चरुओं के अदल–बदल जाने के कारण ही महर्षि विश्वामित्र जो क्षत्रिय कुल में पैदा हुए वे ब्राह्मण धर्म का पालन करते थे वहीं परशुराम ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे परंतु क्षत्रिय धर्म का पालन करते थे। महर्षि विश्वामित्र के पूर्वजों में महर्षि जहनु थे जो गंगा से नाराज होकर उसका सारा जल पी गए थे।

गायत्री मंत्र के द्रष्टा

ऋग्वेद में 10 मंडल हैं जिन्हें अलग–अलग ऋषियों के द्वारा रचा गया है। महर्षि विश्वामित्र ऋग्वेद के तीसरे मंडल के द्रष्टा हैं। इस कारण तीसरे मंडल को वैश्वमित्र मंडल कहा जाता है। ऋग्वेद के तीसरे मंडल के 62वें सूक्त में गायत्री मंत्र का वर्णन किया गया है। गायत्री मंत्र को सभी वेद मंत्रों का मूल कहा जाता है।

गायत्री मंत्र–

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात।

अर्थात उस प्राणस्वरूप, दुखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अपने अन्तःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

तीसरे मंडल में इंद्र, अदिति, अग्नि, उषा, अश्विनी आदि देवताओं की स्तुतियों के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान, अध्यात्म और गौ महिमा का वर्णन किया गया है।

सातवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में शामिल

विभिन्न मन्वंतरों में अलग–अलग सप्तर्षि हुए हैं जिनका उल्लेख विष्णु पुराण सहित विभिन्न धर्मग्रंथों में किया गया है। सातवें मन्वंतर में जिन 7 ऋषियों का उल्लेख किया गया है उनमें महर्षि विश्वामित्र भी शामिल हैं। सातवें मन्वंतर में शामिल सप्तर्षि है वशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र और भारद्वाज।

महर्षि विश्वामित्र और वशिष्ठ के मध्य संघर्ष

ऐसे कई कथा प्रसंगों का उल्लेख पुराणों में किया गया है जहां महर्षि वशिष्ठ एवं विश्वामित्र के मध्य संघर्ष हुआ है। महर्षि वशिष्ठ एवं विश्वामित्र के मध्य परस्पर युद्ध का भी उल्लेख कई जगहों पर मिलता है। महर्षि वशिष्ठ विश्वामित्र के ब्राह्मणत्व को स्वीकार नहीं करते थे क्योंकि विश्वामित्र का जन्म क्षत्रिय कुल में हुआ था। इस कारण दोनों ऋषियों के मध्य संघर्ष था।

विश्वामित्र और वशिष्ठ में मित्रता

महर्षि वशिष्ठ के साथ निरंतर संघर्ष एवं विवाद के कारण महर्षि विश्वामित्र के मन में वशिष्ठ को लेकर कुछ दुर्भावना शेष थी। एक दिन वह दुर्भावना पूर्वसंस्कारवश उभर आई और वे वशिष्ठ का अनिष्ट करने के लिए उनके आश्रम पहुंच गए। उस समय अरुंधति और वशिष्ठ आपस में विश्वामित्र की ही चर्चा कर रहे थे।

अरुंधति ने कहा– आजकल विश्वामित्र के तप की बड़ी प्रशंसा हो रही है। सुना है कि वह अपने तपोबल से क्षत्रिय से ब्राह्मण हो गए हैं।

इस पर महर्षि वशिष्ठ ने कहा सत्य है, वर्तमान में विश्वामित्र बहुत ही ऊंचे तपस्वी है। उनके ब्राह्मण होने में भला किसे संदेह है।

वशिष्ठ को एकांत में इस प्रकार की बातें करते सुन विश्वामित्र का मन निर्मल हो गया। इसके पश्चात महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र के मध्य मित्रता स्थापित हो गई।

ताड़का का वध और यज्ञ की पूर्णाहुति

जिस वन में महर्षि विश्वामित्र का आश्रम था उसी वन में ताड़का नाम की एक राक्षसी रहती थी। उस वन को सुंदरवन या ताड़का वन कहा जाता था। ताड़का के पुत्र मारीच और सुबाहु थे। ये सभी ऋषि–मुनियों द्वारा किए जाने वाले यज्ञ में तरह–तरह से बाधा पहुंचाते थे। यज्ञ बिना बाधा के संपन्न हो जाए इसके लिए सहयोग मांगने हेतु महर्षि विश्वामित्र राजा दशरथ के पास गए। उन्होंने राजा दशरथ से कहा कि वह अपने पुत्र श्रीराम को हमारे साथ भेज दें ताकि यज्ञ के दौरान कोई बाधा उत्पन्न ना हो। अनिच्छा के बावजूद राजा दशरथ ने श्रीराम और लक्ष्मण को यज्ञ में सहयोग देने के लिए विश्वामित्र जी के साथ भेज दिया। जब महर्षि विश्वामित्र अपने आश्रम में बाधारहित यज्ञ के निष्पादन के लिए प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण को अपने साथ लेकर आए तो उन्होंने श्रीराम को दंडचक्र, विष्णुचक्र, इंद्रचक्र जैसे कई दिव्यास्त्र प्रदान किए। महर्षि विश्वामित्र ने अपनी धनुर्विद्या का एषीकास्त्र, दो दिव्य धनुष तथा दिव्य ब्रह्मास्त्र भी प्रदान किए। श्रीराम और लक्ष्मण ने 6 दिन और 6 रात्रि तक लगातार जागकर विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की। श्रीराम ने ताड़का और सुबाहु का वध कर एवं मारीच को अपने बाणों से दक्षिणी समुद्र में गिरा कर विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की जिससे बिना किसी विघ्न–बाधा के यज्ञ की पूर्णाहुति संभव हो सकी।

अहिल्या का उद्धार

जब श्रीराम और लक्ष्मण विश्वामित्र के आश्रम में थे उसी समय मिथिला के राजा जनक जी ने सीता जी के स्वयंवर का निमंत्रण भेजा। श्रीराम और लक्ष्मण को साथ लेकर महर्षि विश्वामित्र जनक जी के निमंत्रण पर मिथिला गए। मिथिला में जब राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के साथ मिथिला के वन–उपवन को देख रहे थे वहीं उन्हें एक निर्जन आश्रम मिला।

निर्जन आश्रम को देखकर विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को बताया कि यह पहले महर्षि गौतम का आश्रम था। महर्षि गौतम ने इंद्र द्वारा किए गए छल से कुपित होकर अपनी पत्नी अहिल्या को पत्थर बन जाने का शाप दिया और कहा कि जब प्रभु श्रीराम इस वन में प्रवेश करेंगे तभी उनके स्पर्श से तुम्हारा उद्धार होगा। शाप देकर गौतम ऋषि हिमालय की ओर प्रस्थान कर गए।

इतना बताकर विश्वामित्र ने श्री राम से कहा कि तुम आश्रम में प्रवेश कर अहिल्या का उद्धार कर दो। श्री राम के आश्रम में प्रवेश करते ही अहिल्या पत्थर से नारी के रूप में प्रकट हो गई।

सीता जी का स्वयंवर

सीता जी के स्वयंवर में यह शर्त रखी गई थी कि जो शिव जी के धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाएगा उसी के साथ सीता जी का विवाह होगा। स्वयंवर में बड़े–बड़े राजा उपस्थित हुए परंतु उनमें से कोई भी उस धनुष को हिला तक नहीं सका। तब महर्षि विश्वामित्र के आदेश पर श्रीराम ने उस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाई। प्रत्यंचा चढ़ाने के क्रम में वह धनुष दो भागों में टूट गया। स्वयंवर की शर्तों को पूरा करने के पश्चात श्री राम का विवाह सीता जी के साथ संपन्न हुआ।

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), बिहार ने माननीय राज्यपाल से शिष्टाचार मुलाकात की (06 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल से केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री गिरिराज सिंह के नेतृत्व में आठ सदस्यीय शिष्टमंडल ने राजभवन आकर मुलाकात की और ज्ञापन सौंपा (14 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने सिक्किम के माननीय राज्यपाल श्री लक्ष्मण प्रसाद आचार्य के राजभवन, पटना आगमन पर उनका स्वागत किया। (16 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल से पूर्व रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु ने राजभवन आकर शिष्टाचार मुलाकात की (25 नवम्बर, 2023)

इटली के महावाणिज्य दूतावास के उच्चायुक्त डॉ. जियानलुका रुबागोटी ने माननीय राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट की (02 दिसम्बर, 2023)

मॉरीशस के उच्चायुक्त ने राजभवन में माननीय राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट की (13 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने कश्मीर के युवा प्रतिभागियों के साथ मुलाकात की (22 दिसम्बर, 2023)

माननीय केंद्रीय मंत्री श्री हरदीप सिंह पुरी ने राजभवन में माननीय राज्यपाल से शिष्टाचार भेंट की (26 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पटना उच्च न्यायालय के माननीय न्यायमूर्ति गुन्नू अनुपमा चक्रवर्ती को शपथ दिलाई (01 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पटना हाई कोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति नानी टैगिया को शपथ दिलाई (01 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पटना हाई कोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति रुद्र प्रकाश मिश्र को शपथ दिलायी (04 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पटना हाई कोर्ट के माननीय न्यायमूर्ति रमेश चंद मालवीय को शपथ दिलाई (04 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने माननीय श्री न्यायमूर्ति बिबेक चौधरी को पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में शपथ दिलाई (24 नवम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने श्री त्रिपुरारी शरण को राज्य मुख्य सूचना आयुक्त के रूप में शपथ दिलायी (28 दिसम्बर, 2023)

पुस्तक विमोचन

माननीय राज्यपाल ने पूर्व सांसद आर के सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया (06 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने इतिहास संकलन समिति, बिहार द्वारा संकलित पुस्तक का विमोचन किया (21 अक्टूबर, 2023)

बिहार डेयरी और कैटल एक्सपो में दिखा पशुओं के प्रति प्रेम

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, कोम्फेड, कृषिका और सोसाइटी फॉर प्रोमोशन ऑफ फार्म एंड कम्पैनियन एनिमल्स के संयुक्त तत्वावधान में विश्वविद्यालय के खेल परिसर में राज्य का पहला डेयरी और कैटल एक्सपो का आयोजन किया गया। इस आयोजन में बड़ी संख्या में किसान, पशुपालक और कृषि–पशुपालन से जुड़े उद्यमियों ने शिरकत की। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अंगीभूत पशु चिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, किशनगंज का शुभारंभ किया गया, साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा निर्मित पशुपोषण एप को भी लांच किया। हरियाणा से आये 10 करोड़ के भैंसा गोलू–2 इस एक्सपो का मुख्य आकर्षण का केंद्र रहा। इस एक्सपो में कुल 38 स्टॉल लगाये गए थे, जिनमें पशुचारा निर्माता कंपनी, कॉम्फेड, लोन परामर्श हेतु राष्ट्रीय बैंक, कई कृषि विज्ञान केंद्र के साथ विश्वविद्यालय के स्टॉल शामिल थे, जहां लोगों ने पशुपालन संबंधी परामर्श हासिल किये। इस एक्सपो में सर्वाधिक दूध देने वाली गाय व भैंस की प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी थी, जिसमें मोकामा के कुमार संभव की गाय को एक दिन में सर्वाधिक 40.240 लीटर दूध देने पर प्रथम, गोपालगंज की खुशबू कुमारी की गाय 38.44 लीटर दूध देकर दूसरे स्थान पर रही। ये दोनों गायें एच.एफ. क्रॉस नस्ल की थीं। इस एक्सपो में कई देशी नस्ल के गाय व बैल लाये गए थे, जिसमें बिहार के बचौर, गंगातीरी, गीर, साहिवाल इत्यादि शामिल थे।

वेटरनरी पैरासाइटोलॉजी की 32वीं राष्ट्रीय कांग्रेस का आयोजन

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय में 32वीं राष्ट्रीय कांग्रेस एवं वर्तमान परिदृश्य में पशुधन की उत्पादकता में सुधार के लिए परजीवी रोगों का स्थायी नियंत्रण विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी में कहा गया कि पशुपालन और मात्स्यिकी विज्ञान में हम दिन–प्रतिदिन मजबूत होते जा रहे हैं और राज्य के किसान और पशुपालक लाभान्वित हुए हैं। बिहार अपनी पुरानी अस्मिता और गौरव को वापस पाने में सक्षम हुआ है, अब बिहार बदल चुका है। इस अवसर पर देश के सभी शिक्षाविदों को बिहार के शिक्षा और विकास में भागीदार बनने के लिए आमंत्रित किया गया और आह्वान किया गया कि वे इस विश्वविद्यालय में योगदान देकर बिहार को समृद्धि की ओर ले जाने में सार्थक योगदान दें।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रामेश्वर सिंह ने बताया कि विश्वविद्यालय के गठन के बाद से ही यह विश्वविद्यालय राज्य के पशुपालन, मत्स्यपालन और डेयरी क्षेत्र के विकास में अपनी सहभागिता निभाते आया है। विश्वविद्यालय ने तृतीय कृषि रोडमैप और अब चतुर्थ कृषि रोडमैप को तैयार करने में अपना योगदान दिया है। परजीवी विज्ञान पर आयोजित इस कांग्रेस पर उन्होंने कहा कि जल–जमाव राज्य की बहुत बड़ी समस्या है। बिहार के बहुत सारे जिले बाढ़ से प्रभावित होते है और इन क्षेत्रों में जल जमाव एक बड़ी समस्या है। जमे हुए पानी में परजीवियों के पैदा होने व बढ़ोतरी की संभावनाएं बढ़ जाती है और यह परजीवी जनित रोगों का कारण बनकर आस–पास के जन–जीवन को प्रभावित करते है, इसलिए इस संगोष्ठी में हम इस गंभीर समस्या के निदान की दिशा में चर्चा कर ठोस कदम उठायेंगे।

इस अवसर पर देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों व शोध संस्थानों से आये वैज्ञानिकों को पुरस्कृत भी किया गया। डॉ. बी.वी. नारलड़केर को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया, साथ ही डॉ. बी. आर. लता, डॉ. शाहरदार, डॉ. श्रीनिवासमूर्ति, डॉ. सौंदरराजन, डॉ. के. पी. श्यामा, आदि को भी सम्मानित किया गया।

कुम्हरार : चंद्रगुप्त मौर्य के महल का अवशेष

चन्द्रगुप्त मौर्य, बिन्दुसार तथा अशोक कालीन पाटलिपुत्र के भग्नावशेष को अपने आगोश में समेटे कुम्हरार परिसर वर्तमान में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा संरक्षित तथा संचालित है। मेगास्थनीज, जो चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में प्रसिद्ध यूनानी राजदूत थे, ने पाटलिपुत्र और उसके नगरपालिका प्रशासन का पहला ज्वलंत विवरण प्रस्तुत किया था। उनकी **इंडिका** नामक पुस्तक में इस नगर का उल्लेख पॉलिबोथ्रा के नाम से किया गया है। उसके विवरण के अनुसार, शहर एक समांतर चतुर्भुज की तरह था, जो गंगा नदी के किनारे लगभग 14 किलोमीटर पूर्व–पश्चिम और 3 किलोमीटर उत्तर–दक्षिण में था। नगर की परिधि लगभग 36 किलोमीटर थी। शहर को विशाल लकड़ी के तख्तों द्वारा और आगे एक चौड़ी और गहरी खाई द्वारा संरक्षित किया गया था, जो शहर के सीवर के रूप में भी काम करता था। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि चंद्रगुप्त मौर्य का सुंदर शाही महल लकड़ी से बनाया गया था।

कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में शहर के चारों ओर विस्तृत प्राचीरों का उल्लेख किया है। यहां आसपास की खुदाई से लकड़ी के तख्तों के अवशेष मिले हैं। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान, जिन्होंने 5वीं शताब्दी ईस्वी के प्रारंभ में इस स्थान का दौरा किया था, ने पाटलिपुत्र को एक समृद्ध शहर और शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र बताया है।

अस्सी स्तंभों वाला हॉल

कतिपय इतिहासकारों के अनुसार कुम्हरार वह जगह है जहां सम्राट अशोक के शासन काल में तृतीय बौद्ध संगीति हुई थी। जहां आज कुम्हरार के अवशेष हैं वहां पर कभी शानदार नियोजित नगर हुआ करता था जिसके कुछ अवशेष आज भी यहां देखे जा सकते हैं। खंडहरों को देखकर लगता है कि कभी यह स्थल भव्य सत्ता का केन्द्र रहा होगा। कुम्हरार का महल लकड़ी का बना हुआ था। भवन योजना कुछ इस तरह की थी कि 32 फीट ऊंचाई और 9 फीट गहराई वाले विशाल पत्थरों के पिलर पर इमारत खड़ी थी, परंतु छत के लिए लकड़ी का इस्तेमाल किया गया था। पिलर के निर्माण के लिए चुनार से लाए गए बलुआ पत्थर का इस्तेमाल किया गया था। कुम्हरार की नगर योजना में परिवहन के लिए नहरों का इस्तेमाल किया जाता था। आप कल्पना कर सकते हैं कि राजमहल का नजारा कैसा रहा होगा।

वर्तमान पटना में कुम्हरार पार्क नामक स्थान की खुदाई सबसे पहले वर्ष 1912–15 में डीबी स्पूनर के मार्गदर्शन में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा की गई थी। दूसरी खुदाई 1951–55 के दौरान की गई थी। पहली खुदाई में 72 पत्थर के स्तंभों के निशान मिले थे और दूसरी खुदाई में 8 और स्तंभों के निशान मिले थे। प्रवेश द्वार और बरामदे के अतिरिक्त चार खम्भे भी मिले थे। इन 80 स्तंभों की खुदाई से इस स्थान को 'अस्सी स्तंभों वाला हॉल' का नाम दिया गया।

स्तंभों को पूर्व से पश्चिम तक 10 और उत्तर से दक्षिण तक 8 की समानांतर पंक्तियों में व्यवस्थित किया गया था। प्रवेश द्वार दक्षिण की ओर स्थित था। खंभे एक–दूसरे से करीब 15 फीट की दूरी पर लगाए गए थे। खंभे चमकदार मोनोलिथ थे, जो मौर्य काल के दौरान प्रमुख रुप से इस्तेमाल किए जाते थे। ये उत्तर प्रदेश के चुनार से उत्खनित बलुआ पत्थर से बने थे। वर्गाकार लकड़ी के तहखानों पर स्थापित प्रत्येक स्तंभ की ऊंचाई

लगभग 32 फीट थी, जिसमें से लगभग 9 फीट नीचे दबे हुए थे। फर्श के समान छत पर भी लकड़ी की संरचना थी।

हॉल के किनारों को एक दीवार से बंद किया गया था। यह एक खुले मंडप जैसा था। प्रवेश द्वार पर साल की लकड़ी से बने सात मंच थे, जो संभवतः सोन नदी से जुड़ी नहर तक उतरने वाली लगभग 30 सीढ़ियों की एक चौड़ी लकड़ी की सीढ़ी का समर्थन करते थे। 43 फीट चौड़ी और 10 फीट गहरी इस नहर का उपयोग हॉल में नाव से आने वाले आगंतुकों द्वारा किया जाता था और इसका उपयोग गंगा नदी के किनारे चुनार की पत्थर की खदान से विशाल और भारी मोनोलिथ के परिवहन के लिए भी किया जाता था।

जहां तक इस संरचना की उत्पत्ति का सवाल है, सबसे स्वीकार्य सिद्धांत यह है कि यह अशोक के शासनकाल के दौरान पाटलिपुत्र में आयोजित बौद्ध परिषद के लिए तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास बनाया गया एक सम्मेलन कक्ष था।

आरोग्य विहार

1951–55 में कुम्हरार में की गई खुदाई से चौथी–पांचवीं शताब्दी की एक और ईंट की संरचना का पता चला। यह गुप्त काल के दौरान प्रसिद्ध चिकित्सक धन्वंतरि द्वारा संचालित एक अस्पताल–सह–मठ था।यहां मिली टेराकोटा सील पर एक शिलालेख के आधार पर इसकी पहचान आरोग्य विहार या अस्पताल–सह–मठ के रूप में की गई थी। इस अंडाकार संरचना के ऊपरी आधे हिस्से

पर एक पेड़ है, जो संभवतः एक बोधि वृक्ष है जिसके दोनों तरफ शंख हैं, निचले आधे हिस्से पर गुप्त ब्राह्मी लिपि में 'श्री आरोग्य विहारे भिक्षु समस्या' शिलालेख है। एक अन्य लाल बर्तन का टुकड़ा 'धन्वंतरेह' शिलालेख के साथ पाया गया, जो संभवतः आरोग्य विहार के पीठासीन चिकित्सक के नाम या पदवी का उल्लेख करता है। यह संरचना एक अच्छी तरह से रखी गई नींव पर खड़ी की गई थी। कमरों की चौड़ाई 10 फीट थी लेकिन इसकी लंबाई साढ़े 10 से साढ़े 21 फीट तक थी।

मलबे में कई नक्काशीदार ईंटें भी मिलीं। संभवतः इनसे इमारत की दीवारों को सजाया गया था। इस क्षेत्र की खुदाई से प्राप्त महत्वपूर्ण वस्तुओं में तांबे के सिक्के, आभूषण, सुरमा की छड़ें, टेराकोटा और पत्थर के मोती, टेराकोटा और हाथी दांत के पासे, टेराकोटा मुहरें, एक खिलौना गाड़ी आदि थे।

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन–त्सियांग ने सातवीं शताब्दी ईस्वी में शहर का दौरा किया था, तब तक अधिकांश शहर खंडहर हो चुका था। प्रारंभिक पाल काल के दौरान भी यह शहर राजधानी बना रहा। उसके बाद, शहर ने अपनी राजधानी का दर्जा खो दिया फिर भी एक महत्वपूर्ण केंद्र बना रहा। फिलहाल खुदाई वाली जगह को ढक दिया गया है। यहां कुछ स्तंभों के अवशेष ही देखे जाएंगे। कुम्हरार पार्क परिसर में एक छोटा सा संग्रहालय है, जहाँ खुदाई से प्राप्त कुछ कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

इतिहासकारों के अनुसार अजातशत्रु ने मगध की रक्षा के लिए यहां नगरकोट का निर्माण कराया था। भगवान बुद्ध ने पाटलिपुत्र में एक नगरकोट को देखा था। बाद में अजातशत्रु के पुत्र उदयन ने पाटलिपुत्र का महत्व समझते हुए पांचवी सदी ई.पू. में मगध की राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया। तब से लेकर अगले एक हजार साल तक मगध की राजधानी पाटलिपुत्र ही रहा। इस दौरान शिशुनाग, नंद, मौर्य, शुंग एवं गुप्त आदि वंश का शासन काल आया।

कुछ विद्वान मानते हैं कि पाल काल में पाटलिपुत्र का राजधानी के तौर पर अस्तित्व था। पाटलिपुत्र की वैभव गाथा का वर्णन 300 ई.पू. में आए यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने अपनी पुस्तक इंडिका में विस्तार से किया है। वहीं पांचवी सदी के चीनी यात्री फाह्यिान ने पाटलिपुत्र को संपन्न नगर बताया था। आज के लोहानीपुर, बहादुरपुर, संदलपुर, कुम्हरार, बुलंदीबाग जैसे मुहल्ले मौर्यकालीन हैं। इन स्थलों से मौर्यकालीन काष्ठ महलों के अवशेष प्राप्त हुए हैं। मेगास्थनीज ने चंद्रगुप्त मौर्य के काष्ठनिर्मित महल के बारे में भी लिखा था। उसके मुताबिक पाटलिपुत्र शहर ईरान के सूसा और एकबतना से भी अधिक सुंदर था। अशोक के शासनकाल में पाटलिपुत्र में तृतीय बौद्ध संगीति के होने का प्रमाण मिलता है। यह सम्मेलन 249 ई.पू. में हुआ था। इसकी अध्यक्षता तिस्स मोग्गलीपुत्त ने की थी। माना जाता है कि इसी संगीति में त्रिपिटक को अंतिम रुप दिया गया था।

गया का तिलकुट

खुशबू और स्वाद में लाजवाब

मकर संक्रांति के दिन तिल खाने का बड़ा ही महत्व बताया गया है। इस अवसर पर तिल के लड्डू और तिल की मिठाइयाँ आदि खूब बिकते हैं। बाजार तिलकुट की सोंधी खुशबू से महकता रहता है। भूने हुए तिल और चीनी या गुड़ से बनने वाली इस मिठाई की अनेक विशेषताएँ हैं। भुरभुरा और अनोखा व लाजवाब स्वाद वाला यह तिलकुट सर्दियों में अत्यंत गुणकारी है। यह विशेष रूप से मकर संक्रांति के अवसर पर बनाया और खाया जाता है।

खास तरीके से बनाया जाने वाला बिहार के गया का तिलकुट पूरे देश में प्रसिद्ध है। गया से तिलकुट बनाने वाले कारीगर देश के विभिन्न हिस्सों में जाते हैं और वहां इसे तैयार करते हैं। गया के तिलकुट की खुशबू और इसके स्वाद का ही जादू है कि प्रवासी भारतीयों के माध्यम से विदेशों तक भी यह लोकप्रिय हो गया हैं।

गया के प्रसिद्ध तिलकुट को जीआई टैग दिलाने के लिए प्रयास जारी है और इस हेतु प्रारंभिक प्रस्ताव स्वीकृत भी कर लिया गया है। नाबार्ड, गया के डीडीएम उदय कुमार के अनुसार अब आगे इसकी हियरिंग होगी। फैक्ट फाइंडिंग के बाद उम्मीद है कि इसे जीआई टैग मिलेगा। पूरे भारत में 420 जीआई टैग में से 91 नाबार्ड के सहयोग से मिले हैं। गया के तिलकुट व्यवसायियों को उम्मीद है कि जीआई टैग मिलने से विश्व स्तर पर इसकी पहचान बनेगी और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर कारोबार का विस्तार होगा। इससे इस व्यवसाय से जुड़े हजारों परिवारों की आमदनी भी बढ़ेगी।

गया में तिलकुट की मुख्य मंडी रमना और टिकारी रोड में है, जहाँ का तिलकुट बड़ा ही लाजवाब होता है। यहां मकर संक्रांति के डेढ़–दो महीने पहले से ही इसे बनाने का काम शुरू हो जाता है। आज गया में तकरीबन 100 से अधिक बड़े तिलकुट भंडार हैं, जहां बड़े पैमाने पर इसका निर्माण होता है। यहां से इसे देश के कोने–कोने के अलावा विदेशों में भी भेजा जाता है। इस व्यवसाय से तकरीबन 3000 से अधिक परिवारों का घर चलता है। ठंड के मौसम में अधिक मांग होने के कारण गया के रमना रोड, टिकारी रोड और स्टेशन रोड इलाके में हर घर से तिलकुट की सोंधी महक आती रहती है। ठंड के मौसम में तिलकुट व्यवसायियों की संख्या और बढ़ जाती है।

माना जाता है कि तिलकुट की उत्पत्ति गया जिले से ही हुई हैं और यहां इसे बनाने की परंपरा वर्षों से चलती आ रही हैं। इस मिठाई का उल्लेख बौद्ध साहित्य में 'पलाला' नाम से मिलता है। तिलकुट बनाने वाले कारीगर तिल को साफ कर व अच्छे से भून कर इसे चीनी या गुड़ की चाशनी के साथ देर तक कूटते हैं। तिलकुट की गुणवत्ता उसमें तिल और गुड़ या चीनी की मात्रा और उसके भुरभुरेपन पर निर्भर है। कम मिठास और अधिक भुरभुरेपन वाला तिलकुट अच्छा माना जाता है। इसे बनाने वाले गया के कारीगर रामदेव प्रसाद बताते हैं कि हाथ से कूट कर बनाए जाने वाला तिलकुट इतना खास्ता होता है कि जोर से छू लेने भर से यह टूट जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि गया से अच्छा तिलकुट कहीं मिलना संभव नहीं है।

गया के रमना के अलावा अब टेकारी रोड और कोयरीबारी समेत कई जगहों पर तिलकुट बनाया जाता है। सैकड़ों परिवारों का यह खानदानी पेशा बना हुआ है। गया में बनने वाले तिलकुट उत्तर प्रदेश, झारखंड, पश्चिम बंगाल, मध्यप्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र एवं गुजरात आदि के अलावा नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, पाकिस्तान आदि देशों में भी भेजा जाता है। इधर के कुछ वर्षों से फिजी, मॉरीशस, यूके, यूएस समेत कई देशों से तिलकुट की मांग होने लगी है। प्रवासी भारतीयों की वजह से भी दुनिया के कई देशों में इसका प्रचार–प्रसार तेजी से हो रहा है। महाबोधि मंदिर और मोक्षधाम के लिए राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध ज्ञान की नगरी गया में दिसंबर से जनवरी–फरवरी के बीच आने वाले विदेशी पर्यटक यहाँ के तिलकुट का स्वाद लेना और इसे पैक करवा कर ले जाना नहीं भूलते हैं।

गया के तिलकुट के स्वाद का कोई जोड़ नहीं है। वहाँ वर्षों से तिलकुट बनाने वाले कारीगर मुकुन्द साह बताते हैं कि प्रधानमंत्री रहते हुए एक बार इंदिरा गांधी ने भी यहां के तिलकुट का स्वाद लिया था और इसकी प्रशंसा की थी। पिछले कुछ वर्षों से प्रधानमंत्री आवास और राष्ट्रपति भवन में भी गया से तिलकुट भेजा जाता है। इसके अलावा भारत के विभिन्न प्रांतों व विदेशों से इसकी मांग बढ़ने के कारण गया के तिलकुट व्यवसाय से जुड़े लोगों में उत्साह बढ़ा है।

भाई–बहन के प्रेम का त्योहार

सामा–चकेवा

भाई–बहन के प्रेम का त्योहार सामा चकेवा मिथिला सहित भोजपुरी अंचल का प्रसिद्ध लोक पर्व है। यह पर्यावरण, पशु–पक्षी और भाई बहन के स्नेह संबंधों को गहरा करने का प्रतीक भी है। यह त्योहार सात दिनों तक चलता है। इसकी शुरुआत कार्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि से होती है। इसका विसर्जन कार्तिक पूर्णिमा की रात में होता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष की सप्तमी यानी छठ पर्व के पारण के दिन महिलाएं सामा चकेवा बनाती हैं। इस पर्व को मनाने के दौरान महिलाएं लोक गीत गाती हैं और अपने भाई की मंगल कामना के लिए भगवान से प्रार्थना करती हैं। ग्रामीण अंचलों में इस पर्व को बहुत धूमधाम से मनाया जाता है।

सामा चकेवा एक लोक उत्सव है, जो कि सालों से मनाया जा रहा है। यह पर्व छठ महापर्व के समाप्त होने के बाद शुरू होता है और कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि को खत्म हो जाता है। इस पर्व को मनाने के दौरान महिलाएं गाना गाती हैं और उत्सव मनाती हैं। सभी बहनें इस पर्व को अपने भाई की मंगल कामना के लिए मनाती हैं और प्रति रात गीत गाकर कामना करती है कि उसका भाई स्वस्थ व दीर्घायु हो।

सामा चकेवा की लोककथा

लोककथा है कि सामा भगवान श्री कृष्ण की पुत्री थी जो कि प्रत्येक दिन वृंदावन के जंगल में खेलने जाया करती थी। एक दिन चुगला नाम का एक व्यक्ति ने श्री कृष्ण को झूठ बोल दिया कि आपकी बेटी कोई साधु से मिलने जाती है। इस पर भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी बेटी यानी सामा को पक्षी बनने का श्राप दे दिया। अब वह सामा रूपी पक्षी वृंदावन के जंगल में ही रहने लगी।

एक दिन सामा के भाई चकेवा को पता चला कि उसकी बहन को चुगला ने चुगलपन कर के श्राप दिलवा दिया है तो वह अपनी बहन को श्राप से मुक्त कराने व भगवान श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या करने लगा। उसकी कठोर

तपस्या से भगवान प्रसन्न हुए और उन्होंने उससे वर मांगने को कहा तो वह अपनी बहन को श्रापमुक्त कर मनुष्य–शरीर वापस देने का वर मांग लिया, इसलिए इस पर्व को भाई–बहन के प्रेम और स्नेह के रूप में हर साल मनाया जाता है। हरेक बहन अपने भाई के दीर्घायु होने की कामना करती हैं।

सामा चकेवा का खेल खेलने के लिए महिलाएं सामा और चकेवा की मिट्टी की मूर्ति बनाती हैं। फिर उसे सुखाकर बांस की डलिया में रखती हैं। सूखने के बाद मूर्तियों को रंग से रंगाई करती और सजाती हैं। इसके बाद सभी बहने उन मूर्तियों के संग खेलती हैं और गीत गाते हुए अपने भाई की कुशलता की प्रार्थना करती हैं। महिलाएं एवं लड़कियां सिर के ऊपर उस बांस की डलिया को लेकर चांदनी रात में गीत गाते हुए गलियों में घूमती हैं। डलिया में एक दीपक जला कर रखा जाता है। महिलाएं उसी दीपक की लौ से चुगला का मुंह झुलसाती और उसे चुगली करने के लिए कोसती हैं। पूर्णिमा के दिन सभी मूर्तियों और खिलौनों को विसर्जित कर दिया जाता है।

देवोत्थान एकादशी से भी होती है शुरुआत

सामा–चकेवा पर्व की शुरुआत छठ के पारण के दिन से हो जाती है। महिलाएं अपने–अपने घर में इस दिन से सामा चकेवा बनाना शुरु कर देती हैं। जो इस दिन नहीं बना पाती हैं, वह देवउठान एकादशी के दिन बनाती हैं। इसमें सामा, चकेवा, वृंदावन, चुगला, सतभैया, पेटी, पेटार आदि मिट्टी से बनाए जाते हैं। छठ के पारण के दिन से ही नियमित रात्रि के समय आंगन में बैठ कर महिलाएं (युवतियां व तरूणियां) गीत गाती और खेलती हैं। वे चांदनी रात में आंगन में बैठ कर भगवती गीत, ब्राम्हण गीत और अंत में बेटी की विदाई का समदाउन गाती हैं। यह सिलसिला कार्तिक पूर्णिमा के दिन तक चलता है। उसके बाद कार्तिक पूर्णिमा की रात में सामा का विसर्जन किसी तलाब, पोखर या नदी में किया जाता है, जिसमें महिलाओं के संग घर के पुरुष भी शामिल रहते हैं। विसर्जन के बाद महिलाएं अपने परिजनों को लाई (मुरी) और मुकुंदाना या बताशा का प्रसाद देती हैं।

गांधी जयंती के अवसर पर माननीय राज्यपाल ने गांधी मैदान में महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया (02 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण की पुण्य तिथि पर उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण किया (03 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर शास्त्री नगर पार्क में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया (02 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने डॉ. श्रीकृष्ण सिंह को उनकी जयंती के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की (21 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने डॉ. राम मनोहर लोहिया की पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की (12 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर उन्हें नमन किया (31 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने इन्दिरा गांधी की पुण्य तिथि पर उन्हें नमन किया (31 अक्टूबर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने देशरत्न डॉ. राजेंद्र प्रसाद को उनकी जयंती के अवसर पर नमन किया (03 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। (06 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी को उनकी जयंती के अवसर पर श्रद्धांजलि अर्पित की (25 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने सरदार वल्लभ भाई पटेल की पुण्य तिथि के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की (15 दिसम्बर, 2023)

माननीय राज्यपाल ने पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व० अरुण जेटली की जयंती के अवसर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया (28 दिसम्बर, 2023)

गज-ग्राह
हरिहरक्षेत्र

भारत की आध्यात्मिक ओज से सम्पन्न हिमालय से निकलकर गंगा नदी जब बिहार पहुंचती हैं तब शालिग्राम विग्रह को प्रदान करने वाली नारायणी नदी उनसे आ मिलती हैं। इन दोनों पवित्रतमा नदियों का संगम स्थल हरिहरक्षेत्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह तीर्थ क्षेत्र गज और ग्राह के भीषण संघर्ष का गवाह बना। अपनी शक्ति के मद में मतवाला गजराज नारायणी में जलक्रीड़ा करने लगा। उस नदी में निवास करने वाला ग्राह रूपधारी शापग्रस्त यक्ष ने गज के पैर को अपने मजबूत दांतों से पकड़कर उसे जल के अंदर डुबोने लगा। गज का मद चकनाचूर हो गया और उसने आर्त भाव से नारायण को याद करना शुरू किया। शरणागत की रक्षा के लिए नारायण ने अपने सुदर्शनचक्र से ग्राह का वध कर गज को उसके मुख से मुक्त कराया। गज मद और ग्राह माया का प्रतीक है। गज-ग्राह युद्ध का सार्थक संदेश है कि माया यानी वासना से तभी मुक्त हुआ जा सकता है, जब मद (अहंकार) का त्याग कर ईश्वर के शरणागत हुआ जाए।